Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 3-4

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

18-25 जनवरी 2018 ई. 1-8 जमादिउल अव्वल 1439 हिजरी कमरी

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

**मेरे विरोधी उलेमा तथा उन के सहपंथियों ने दोष निकालने में कमी न की तथा विनाश करने के लिए छल-प्रपंच का कोई उपाय नहीं छोड़ा जो न किया हो परन्तु अन्ततः ख़ुदा ने मुझे विजयी किया तथा इसी पर बस नहीं करेगा जब तक झूठ को अपने पैरों के नीचे न कुचले।**

## उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

**108. एक सौ आठ वां निशान** - जिसका उल्लेख बराहीन अहमदिया में है यह है

اَرَدۡتُّ اَنۡ اَسۡتَخۡلِفَ فَخَلَقۡتُ اٰدَمَ -

अर्थात् मैंने इरादा किया कि ख़लीफ़ा बनाऊँ अत: मैंने आदम को ख़लीफ़ा बनाया। यह इल्हाम पच्चीस वर्ष की अवधि से बराहीन अहमदिया में लिखा हुआ है। यहाँ बराहीन अहमदिया में ख़ुदा तआला ने मेरा नाम आदम रखा और यह एक भविष्यवाणी है जो इस बात की ओर संकेत करती है कि जिस प्रकार फ़रिश्तों ने आदम के दोष निकाले थे और उसे रद्द कर दिया था परन्तु अन्ततः ख़ुदा ने उसी आदम को ख़लीफ़ा बनाया और सब को उसके सम्मुख नत-मस्तक होना पड़ा। इसलिए ख़ुदा तआला का कहना है कि यहां भी ऐसा ही होगा। अत: मेरे विरोधी उलेमा तथा उन के सहपंथियों ने दोष निकालने में कमी न की तथा विनाश करने के लिए छल-प्रपंच का कोई उपाय नहीं छोड़ा जो न किया हो परन्तु अन्ततः ख़ुदा ने मुझे विजयी किया तथा इसी पर बस नहीं करेगा जब तक झूठ को अपने पैरों के नीचे न कुचले।

**109. एक सौ नौ वां निशान** - जो बराहीन अहमदिया में स्थान पाकर प्रकाशित हो चुका है यह है

وَ كَذَالِكَ مَنَنَّا عَلٰى يُوۡسُفَ لِنَصۡرِفَ عَنۡهُ السُّوۡءَ وَالۡفَحۡشَآءَ وَلِتُنۡذِرَ قَوۡمًا مَّا اُنۡذِرَ اٰبَآءُهُمۡ فَهُمۡ غَافِلُوۡنَ - देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 555

**अनुवाद** - और इसी प्रकार हमने अपने निशानों के साथ इस यूसुफ़ पर उपकार किया ताकि जो बुराई और दोष उसकी ओर सम्बद्ध किए जाएंगे उन से हम उसे सुरक्षित रखें और ताकि तू उन निशानों की प्रतिष्ठा के कारण इस योग्य हो कि लापरवाह लोगों को डराए क्योंकि वास्तव में उन्हीं लोगों की नसीहत हृदयों पर प्रभाव डालती है जिन्हें ख़ुदा अपनी ओर से प्रतिष्ठा और विशेषता प्रदान करता है। यहाँ ख़ुदा तआला ने मेरा नाम यूसुफ़ रखा तथा यह एक भविष्यवाणी है जिसका अर्थ यह है कि जिस प्रकार यूसुफ़ के भाइयों ने अपनी मूर्खता से यूसुफ़ को बहुत कष्ट दिया था और उसे मारने में कमी नहीं छोड़ी थी। ख़ुदा का कथन है कि यहां भी ऐसा ही होगा तथा संकेत किया है कि ये लोग भी जो जातीय भाई-चारा रखते हैं मारने और तबाह करने के लिए बड़े-बड़े धोखे देंगे परन्तु अन्ततः वे असफल रहेंगे और ख़ुदा उन पर स्पष्ट कर देगा कि जिस व्यक्ति को तुम ने अपमानित करना चाहा था मैंने उसे सम्मान का ताज पहनाया। तब बहुत से लोगों पर स्पष्ट हो जाएगा कि हम ग़लती पर थे जैसा कि वह एक अन्य इल्हाम में कहता है

يَخِرُّوۡنَ عَلَى الۡاَذۡقَانِ سُجَّدًا رَبَّنَا اغۡفِرۡ لَنَا اِنَّا كُنَّا خَاطِئِيۡنَ تَاللّٰهِ لَقَدۡ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيۡنَا وَاِنۡ كُنَّا لَخَاطِئِيۡنَ لَا تَثۡرِيۡبَ عَلَيۡكُمُ الۡيَوۡمَ يَغۡفِرُ اللّٰهُ لَكُمۡ وَهُوَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِيۡنَ

अर्थात् वे लोग अपनी ठोड़ियों पर सजदह करते हुए तथा यह कहते हुए गिरेंगे कि हमारे ख़ुदा! हमें क्षमा कर हम ग़लती पर थे। और तुझे संबोधित करके कहेंगे - ख़ुदा की क़सम ख़ुदा ने हम सब में से तुझे चुन लिया और हम गलती पर थे। तब ख़ुदा इन गलतियों से लौटने वालों अर्थात् पश्चाताप करने वालों से कहेगा कि आज तुम पर कोई डांट-फटकार नहीं क्योंकि तुम ईमान लाए। ख़ुदा तुम्हें तुम्हारी पहली ग़लतियाँ क्षमा कर देगा कि वह दया करने वालों में सर्वाधिक दयालु है।

इसलिए इस भविष्यवाणी में परोक्ष की दो दो बातों का वर्णन है

(1) प्रथम यह कि भविष्य में जाति में कट्टर विरोधी पैदा हो जाएंगे तथा उन में ईर्ष्या की ज्वाला ऐसी उत्तेजित होगी जैसे कि यूसुफ के भाइयों में उत्तेजित हुई थी। अत: वह कट्टर शत्रु बन जाएंगे तथा तबाह करने और मारने के लिए नाना प्रकार की योजनाएं बनाएंगे तथा जाति में से विरोध पैदा हो जाएंगे और बड़े-बड़े उपद्रव करेंगे। यह एक भविष्यवाणी है क्योंकि यह सूचना बराहीन अहमदिया में लिखित है जिस पर पच्चीस वर्ष का समय व्यतीत हो गया है। उस समय जाति में से कोई मेरा विरोधी न था क्योंकि अभी तो बराहीन अहमदिया भी प्रकशित नहीं हुई थी, फिर विरोध की क्या आवश्यकता थी। अत: निस्सन्देह यह सूचना कि किसी युग में ऐसे प्राणों के शत्रु पैदा हो जाएंगे जो पूर्व में इस्लामी भ्रातृसाव के कारण भाइयों के समान थे। यह एक ग़ैब (परोक्ष) की बात है जिसे ख़ुदा ने घटना-पूर्व प्रकट किया और बराहीन अहमदिया में लिखी गई।

(2) द्वितीय परोक्ष की बात इस भविष्यवाणी में यह है कि इस विरोध का यह

शेष पृष्ठ 11 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# सन्देश

## सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

## सालाना इज्तिमा मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया तथा मज्लिस अत्फालुल अहमदिया भारत 2017 ई

**आप में से प्रत्येक को पांचों नमाज़ों को जीवन का लक्ष्य बनाना चाहिए और जितना संभव हो नमाज़ जमाअत के साथ अदा करनी चाहिए**

**प्रत्येक उहदेदार को अपने अन्दर वास्तविक विनम्रता पैदा करने की आवश्यकता है।**

**इस्लाम का प्रत्येक नियम बहुत हिक्मत वाली और मज़बूत बुनियादों पर स्थापित है। "ग़ज़्ज़े बसर" से इस्लाम नफ्स पर काबू रखना सिखाता है। अत: याद रखें के पाकीज़गी एक ख़ादिम का अनिवार्य नैतिक गुण है इस से आप रूहानी तरक्की प्राप्त कर सकते हैं।**

प्यारे ख़ुद्दाम तथा अत्फाल भारत

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बराकातुहू

मेरे लिए यह बात बहुत ख़ुशी का कारण हैं कि आप को अपना वार्षिक इज्तिमा अयोजित करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। अल्लाह तआला इस का आयोजन प्रत्येक दृष्टि से बरकतों वाला करे और समस्त शामिल होने वालों को इस अवसर से भरपूर लाभ उठाने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

मुझ से इस अवसर पर संदेश भिजवाने का अनुरोध किया गया है। मैं इस अवसर पर आप को कुछ नसीहत करना चाहता हूं।

अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में सूरह अल- मोमिनून में सफल मोमिनों के कुछ गुण वर्णन किए हैं वे अपनी नमाज़ों में विनय धारण करते हैं। व्यर्थ बातों से परहेज़ करते हैं। अपने लज्जा के स्थानों की सुरक्षा करते हैं। अपनी अमानतों और वादों का ध्यान रखते हैं और अपनी नमाज़ों की हिफाज़त करते हैं।

याद रखें कि आप सब अहमदी खुद्दाम हैं आप अपने जलसों और इज्तिमाओं के अवसरों पर यह अहद दोहराते हैं कि धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देंगे। इस के लिए प्रत्येक को कूरआन करीम की तिलावत को अनिवार्य बनाना चाहिए क्योंकि यह वह रूहानी नूर है जो हमें वास्तविक रूप से धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता करना सिखाता है। कुरआन करीम ने हमें यह बताया है कि सफल मोमिन विनय और विनम्रता के साथ नमाज़ें अदा करते हैं इसलिए आप में से प्रत्येक को पांचों नमाज़ों को जीवन का लक्ष्य बनाना चाहिए और जितना संभव हो नमाज़ जमाअत के साथ अदा करनी चाहिए क्योंकि जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने का सवाब अकेले नमाज़ पढ़ने से अधिक है जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना एकता का कारण बन जाती है और जमाअत मोमिनों की सामूहिक शक्ति को प्रकट करती है।

फिर आप के इज्तिमा एक दूसरे को नेकी और तक्वा में आगे बढ़ाने वाले होने चाहिए। नौजवान ख़ुद्दाम और बड़ी उमर के अत्फाल को प्रत्येक समय अच्छे दोस्तों और अच्छी संगत में रहना चाहिए। इन्ट्रनेट और सोशल मीडिया का ग़लत उपयोग भी प्राय साधारण बात होती जा रही है। अगर किसी चीज़ या काम के प्रभाव दिमाग़ में पड़ते हों तो कुरआन मजीद के अनुसार वह लग़्व गिना जाएगा और मोमिनों का यह गुण है कि वह व्यर्थ बातों से परहेज़ करते हैं। इसी प्रकार अपने लज्जा एवं मर्यादा को स्थापित रखना मर्दों पर भी फर्ज़ है। इन्हें यह आदेश है कि वह "ग़ज़्ज़े बसर" से काम लेते हुए नज़रें नीची रखें और दिल और दिमाग़ को अपवित्र विचारों और बुरे इरादों से साफ रखें। इस्लाम का प्रत्येक नियम बहुत हिक्मत वाली और मज़बूत बुनियादों पर स्थापित है। "ग़ज़्ज़े बसर" से इस्लाम नफ्स पर काबू रखना सिखाता है। अत: याद रखें के पाकीज़गी एक ख़ादिम का अनिवार्य नैतिक गुण है इस से आप रूहानी तरक्की प्राप्त कर सकते हैं।

फिर प्रत्येक उहदेदार को अपने अन्दर वास्तविक विनम्रता पैदा करने की आवश्यकता है। किसी अहमदी को अहंकार वाला, झगड़ा करने वाला और ग़ुस्सा करने वाला नहीं होना चाहिए। अहमदी ख़ुद्दाम हमारे रूहानी लश्कर की दूसरी सफ में शामिल हैं। आप ने एक दिन पहली सफ में आना है। आप को बड़ी बड़ी ज़िम्मेदारियों का बोझ उठाने के लिए तैय्यार रहना चाहिए। किसी भी जमाअत की सेवा का साधारण न समझें। इस को महान सौभाग्य और अल्लाह का फज़ल समझें। दूसरों के लिए नेक नमूना स्थापित करें। इस तरह प्रत्येक मज्लिस में ऐसे लोग तय्यार हो जाएंगे जो अपने वक्त, माल और इज़्ज़त की कुरबानी के लिए प्रत्येक समय तय्यार रहेंगे। अत: आप को अपनी ज़िम्मेदारियां मेहनत, लग्न और अमानत से अदा करनी चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि आपस में भाईचारा का संबंध मज़बूत से मज़बूत होता चला जाए। प्रत्येक कायद और नाज़िम का ख़ुद्दाम से सीधा सम्पर्क होना चाहिए। इन की सहायता और मार्ग दर्शन के लिए तत्पर रहना चाहिए और इन्हें जमाअत के निकट लाना चाहिए।

अत: समस्त खुद्दाम तथा अत्फाल को याद रखना चाहिए कि वे प्रत्येक प्रकार की नेकियों में आगे बढ़ें। अल्लाह तआला आप सब को इस का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

वस्सलाम

विनीत

**मिर्ज़ा मसरूर अहमद**

खलीफ़तुल मसीह अलख़ामिस

# ख़ुत्बः जुमअः

**हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने असंख्य लेखों और भाषणों और मज्लिसों में अपने दावे के सच्चे होने की दलीलें दीं।**

---

**समय की ज़रूरत के अनुसार मसीह मौऊद के आने और अल्लाह तआला के समर्थनों के आप के पक्ष में होने के बारे में बताया लेकिन जो साफ दिल थे उन्हें तो समझ आ गई और जिनके दिलों में द्वेष था, वैर था, स्वार्थी थे, उन्हें समझ नहीं आई।**

---

**हज़रत अक़्दस मसीह अलैहिस्सलाम अपने दावे की प्रामाणिकता के लिए वर्णन की गई विभिन्न दलीलों और लक्षणों, निशानों का वर्णन। मसीह मुहम्मदी और मसीह मूसवी में समानता का वर्णन**

---

**जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की समानता मूसा अलैहिस्सलाम से है तो इस समानता के आधार पर आवश्यक है कि इस सदी का मुजद्दिद मसीह हो क्योंकि मसीह चौदहवीं सदी में मूसा के बाद आया था और आजकल चौदहवीं सदी ही है**

---

**मसीह मौऊद की तक़्ज़ीब वास्तव में अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तक़्ज़ीब है।**

---

**अल्लाह तआला मुसलमानों बुद्धि दे कि वह केवल मौलवियों की बातों में न आएं बल्कि अपनी बुद्धि का प्रयोग करें और पवित्र होकर अल्लाह तआला से मदद मांगें**

---

**अल्लाह तआला उनके दिल खोले और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर इस स्थिति से बाहर निकलें जिस एक अजीब स्थिति में आजकल मुसलमान दुनिया फंसी हुई है**

---

**लब्बैक या रसूलुल्लाह कहने वाले वास्तव में, हम अहमदी हैं जिन्होंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात को सुना कि जब मेरा मसीह और महदी आए तो उसे मानना, उसे सलाम कहना, यह है लब्बैक कहने का सही तरीका।**

---

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 नवम्बर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक शेअर में फरमाते हैं

वक्त था वक्ते मसीहा न किसी और वक्त
मैं न आता तो कोई और ही आया होता

(दुर्रे-समीन उर्दू, पृष्ठ 160)

वह ज़माना जिस में उस समय के मुसलमान गुज़र रहे थे दर्द रखने वाले मुसलमानों के लिए बहुत अधिक व्याकुल कर देने वाला समय था। लाखों मुसलमान ईसाई हो गए थे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फरमान के अनुसार ऐसी स्थिति हो गई थी कि ईमान सुरैया पर जा चुका था। व्यवहार में मुसलमानों में न धर्म शेष रह गया था न इस्लाम की सच्चाई शेष थी। इस्लाम का दर्द रखने वाले इस इंतज़ार में थे कि कोई मसीहा आए और इस्लाम की डोलती हुई किश्ती को संभाले। इन में से एक सूफी हज़रत अहमद जान साहिब भी थे। उनकी प्रतिष्ठा बहुत दूर-दूर थी। बहुत सारे उनके आस्था रखने वाले थे। उनकी बुजुर्गी के कारण एक बार महाराजा जम्मू ने उन्हें आमंत्रित किया और कहा कि आप जम्मू आकर मेरे लिए दुआ करें लेकिन आप ने मना कर दिया और कहा कि अगर दुआ करवानी है तो मेरे पास आकर करवाओ। बहरहाल बड़े बड़े लोग उन के मुरीद थे। हज़रत सूफी अहमद जान साहिब को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम शुरू से ही बड़ा आस्था का संबंध था। उस समय अभी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दावा नहीं किया था और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे से पहले उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने उसी समय स्थिति को देखते हुए यह भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को निवेदन किया था कि

हम मरीज़ों की है तुम्ही पर नज़र
तुम मसीहा बनो ख़ुदा के लिए।

बहरहाल जैसा कि मैंने कहा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे से पहले उनकी मृत्यु हो गई थी लेकिन उन्हें यह विश्वास था कि आप ही ज़माने के इमाम और मसीह मौऊद हैं। यही कारण है कि उन्होंने अपने बच्चों को, अपने मुरीदों को सलाह दी कि जब भी आप इसका दावा करेंगे, तुम स्वीकार कर लेना।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद, जिल्द 11, पृष्ठ 342 से 343, ख़ुत्बा जुम्अः 23 मार्च 1928 ई)

बहरहाल नेक बुज़ुर्ग लोग जानते थे कि इस्लाम की इस डोलती नाव को अगर उस ज़माने में कोई संभाल सकता है तो वह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम हैं क्योंकि आप ने बराहीने अहमदिया लिखकर इस्लाम के विरोधियों के मुंह बंद किए थे। आपका ऐसा साहित्य मौजूद था जिस का इस्लाम के विरोधी जवाब नहीं दे सकते थे। जब तक आप ने दावा नहीं किया था बड़े बड़े उलमा भी इस बात को मानने वाले थे। लेकिन जब अल्लाह तआला की आज्ञा से आप ने दावा किया तो यही उलेमा अपने निजी हितों के कारण आप का विरोध भी करने लग गए और आज तक यही स्वार्थी उल्मा हैं जो आप का विरोध कर रहे हैं और साधारण मुसलमानों के दिलों में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप की जमाअत के ख़िलाफ घृणा पैदा कर रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी असंख्य लेखों और भाषणों और मज्लिसों में अपने दावे के सच्चे होने की दलीलें दीं। समय की ज़रूरत के अनुसार मसीह मौऊद के आने और अल्लाह तआला के समर्थनों के आप के पक्ष में होने के बारे में बताया लेकिन जो साफ दिल थे उन्हें तो समझ आ गई और जिनके दिलों में द्वेष था, वैर था, स्वार्थी थे, उन्हें समझ नहीं आई।

इस समय मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में से ही कुछ दलीलें

बयान करूँगा जो आप ने वर्णन की हैं। इस बात को ब्यान करते हुए कि इस्लाम में बिदअत सम्मिलित हो चुकी है धर्म अपनी वास्तविक स्थिति में नहीं रहा। उलेमा और बुज़र्गों ने अपनी इच्छाओं को व्यक्त किया है और कई बिदअतें मुसलमानों में प्रवेश कर चुकी हैं। वास्तव में मुसलमान धर्म से दूर चले गए हैं और गैर धर्म वाले, विशेष रूप से ईसाई पादरी बड़ी योजना के साथ इस्लाम पर हमले कर रहे हैं और आपने यह भी फरमाया था कि इन परिस्थितियों की भविष्यवाणी भी अल्लाह तआला और उसके रसूल ने की थी, और अल्लाह तआला और उसके रसूल ने एक व्यक्ति के भेजने की भी भविष्यवाणी की थी। इस बात को बताते हुए, आप फरमाते हैं:

"अब कोई हमारे दावे को छोड़े और अलग रहने दे, लेकिन इन बातों का सोच कर जवाब दे। मेरी तक़ज़ीब करोगे तो इस्लाम को हाथ से तुम्हें देना पड़ेगा।" (मुझे झूठा कहोगे तो फिर तुम इस्लाम से भी दूर हटते हो।) फरमाया कि "लेकिन मैं सच कहता हूँ कि कुरआन शरीफ के वादा के अनुसार अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बिशारत के अनुसार ख़ुदा तआला ने सह सिलसिला शुरू किया है और यह प्रमाणित हो गया है صَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ अल्लाह तआला और उसके रसूल की बातें सच्ची हैं। आत्याचारी प्रकृति का है वह इंसान जो इन बातों को झुठलाता है। "

(मल्फूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 6 से 7, संस्करण 1985 ई मुद्रित यू. के)

आप ने 1903 ई में यह उल्लेख किया और कहा कि मेरे दावे को 22 वर्ष बीत चुके हैं और अल्लाह तआला के समर्थन मेरे साथ हैं। अगर मैं झूठा हूं, तो मेरे साथ अल्लाह तआला का समर्थन क्यों है?

(उद्धरित मल्फूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 7, संस्करण 1985 मुद्रित यू. के)

दूसरे आपने फरमाया कि ज़माना की ज़रूरत है और सभी इस बात को स्वीकार करते हैं कि उस समय मसीह ने आना था और जब ज़रूरत है तो अगर मैं नहीं तो कोई दूसरा पेश करो। बहरहाल कोई सुधारक मुसलमानों के सुधार के लिए आना चाहिए क्योंकि ज़माना में फसाद चरम तक पहुंच गया है इसलिए यदि मुझे झूठ कहना है, तो इस की दो ही अवस्था बनेंगी या कोई दूसरा मुस्लेह प्रस्तुत करो, क्योंकि ज़माना चाहता है कि कोई मुस्लेह आए। या अल्लाह तआला के वादों का इंकार करो कि सारे वादे झूठे थे। ऐसे बिगड़े हुए हालात में किसी मुस्लेह के भेजने का जो वादा था वह ग़लत था। आप ने फरमाया कि ज़रूरत बहर हाल है।

फरमाया कि "कुछ लोगों ऐसे देखे जाते हैं जो कहते हैं कि सुरक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है। वे सख़्त गलती करते हैं (आप उदाहरण दे रहे हैं कि)" देखो जो व्यक्ति बाग़ लगाता है या इमारत बनाता है तो क्या उसका कर्तव्य नहीं होता या वह नहीं चाहता कि उसकी रक्षा और दुश्मन के हाथों से तबाह होने से बचाने के लिए हर तरह की कोशिश करेगा? बाग़ों के चारों ओर कैसे-कैसे घेराव सुरक्षा के लिए बनाए जाते हैं और मकानों को आग को आग से बचाने के लिए नए-नए मसाले तैयार किए गए हैं और बिजली से बचाने के लिए तारें लगाई जाती हैं। ये बातें उस प्रकृति को दर्शाती हैं जो मूल रूप से सुरक्षा के लिए मनुष्य में हैं फिर क्या अल्लाह तआला के लिए यह जायज़ नहीं कि वह अपने धर्म की रक्षा करे? बेशक वह सुरक्षा करता है और उस ने हर बला के समय अपने धर्म को बचाया है अब भी जब कि ज़रूरत पड़ी। "(आप फरमाते हैं)" उस ने मुझे इस लिए भेजा है। हाँ यह बात सुरक्षा की संदिग्ध हो सकती है या इंकार हो सकता था अगर स्थिति और ज़रूरतें उसका समर्थन न करतीं। " (अगर स्थिति दूसरी होती। ज़रूरत इस का समर्थन न कर रही होती तो तुम कह सकते थे कि मैं ग़लत समय पर आया हूँ।) फरमाते हैं " लेकिन कई करोड़ किताबें इस्लाम के रद्द में प्रकाशित हो चुकी हैं और इन विज्ञापनों और दो सफों की पत्रिकाओं की तो गिनती ही नहीं जो हर दिन और साप्ताहिक और माहवार पादिरयों द्वारा प्रकाशित होते हैं। उन गालियों को अगर जमा किया जाए जो हमारे देश के मुर्तद ईसाइयों ने सैय्यदुल मामूमीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के पवित्र सहाबा के बारे में प्रकाशित की हैं को कई छत इन किताबों से भर सकती हैं और अगर उन्हें एक दूसरे से मिला कर रखा जाए तो वह कई मील तक पहुँच जाएं ... " (अमादुद्ददीन एक मुसलमान व्यक्ति था जो बाद में ईसाई हो कर पादरी बन गया फरमाया कि) " अमादुद्दीन की तहरीरों के ख़तरनाक होने का कुछ न्यायप्रिय ईसाइयों को भी स्वीकार है। " (ईसाई भी यह कहते हैं कि उसकी तहरीरें बहुत ख़तरनाक हैं ।) "अत: (उस युग में) लखनऊ से, जो एक समाचार पत्र शम्सुल अख़बार निकला करता था इस में उस की कुछ किताबों पर यह राय लिखी गई थी कि अगर हिन्दुस्तान भर में ग़दर होगा तो एसी तहरीरों से होगा। (जो पादरी लिखता है)फरमाया कि " ऐसी स्थितियों में भी कहते हैं कि इस्लाम का क्या बिगड़ा है ? ऐसी बातें वे लोग कर सकते हैं जिन को इस्लाम से कोई सम्बन्ध और दर्द नहीं है, या वे लोग जिन्होंने बन्द कमरों के अंधेरे तरबियत पाई है और उन्हें बाहर की दुनिया के बारे में कुछ नहीं पता है। इसलिए, यदि वे ऐसे लोग हैं, तो उनकी कुछ परवाह नहीं। हाँ वे लोग जो दिल में नूर रखते हैं जिन को इस्लाम के साथ प्रेम और संबंध है और समय की स्थिति से परिचित हैं उन्हें स्वीकार करना पड़ता है कि यह समय किसी भव्य सुधारक का समय है।"

(मल्फूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 7-8, संस्करण 1 9 85, इंग्लैंड)

और फिर मुस्लेह के आगमन की गवाही का उल्लेख करते हुए, एक ज़बरदस्त गवाही आप ने यह वर्णन फरमाई। विभिन्न बातें वर्णन कर रहे हैं आप ने फरमाया: " ... और बड़ी गवाही मैं वर्णन करता हूं, और यह सुरा नूर में ख़लीफा बनाने के वादा के विपरीत है। इस आयत में, अल्लाह तआला फरमाता है وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ (अन्नूर :56) फरमाया कि " इस आयत में ख़लीफा बनाने के वादा के अनुसार जो ख़लीफे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिलसिले में होंगे वो पहले ख़लीफों की तरह होंगे। इसी प्रकार कुरआन शरीफ में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मूसा का प्रतिरूप कहा फरमाया गया है जैसा फरमाया اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۢ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا (अल-मुज़म्मिल 16) और " फरमाते हैं कि) "आप मूसा के प्रतिरूप मूसा की अपवाद की भविष्यवाणी के अनुसार भी हैं।" (बाइबल में भी अपवाद में लिखा है।) " इसलिए इस समानता में जैसे "कमा" का शब्द लिखा गया है वैसे ही सूरह: नूर में "कमा" शब्द है। इस से स्पष्ट है कि मूसवी सिलसिला और मुहम्मदी सिलसिला में समानता और पूर्ण समता है। मूसवी सिलसिला के ख़लीफाओं का क्रम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर आ कर समाप्त हो गया। और वह हज़रत मूसा अलैहिस्सालम के बाद चौदहवीं सदी में आए थे। इस समानता के लिहाज़ से कम से कम इतना तो ज़रूरी है कि चौदहवीं सदी में एक ख़लीफा इसी रंग में और इसी शक्ति के साथ पैदा हो जो मसीह से समानता रखता हो और उस के दिल और कदम पर हो। अत: अगर अल्लाह तआला इस बात की दूसरी बातें और ग्वाहियां और समर्थन न भी पेश करता तो यह सिलसिला अपने आप समानता को चाहता था कि चौदहवीं सदी में ईसवी प्रतिरूप आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की उम्मत में हो वरना आप की समानता में अल्लाह की पनाह एक कमी और कमज़ोरी पैदा हो जाती। परन्तु अल्लाह तआला ने न केवल इस समानता का समर्थन और सत्यापित कर के दिखाया कि मूसा का प्रतिरूप, मूसा से और समस्त नबियों से उच्चतम है।" (अर्थात आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मूसा अलैहिस्सालम और सारे नबियों से उच्चतम हैं।) फरमाते हैं कि "हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम जैसे अपनी कोई शरीयत ले कर नहीं आए थे बल्कि तौरात को पूरी करने आए थे इसी प्रकार मुहम्मदी सिलसिला का मसीह अपनी कोई शरीयत ले कर नहीं आया था बल्कि कुरआन शरीफ को दोबारा ज़िन्दा करने के लिए आया है और इस पूर्णता के लिए आया है जो हिदायत के प्रकाशन की पूर्णता कहलाती है।"

फिर पूर्ण रूप से हिदायत के प्रकाशन को स्पष्ट करते हुए आप फरमाते हैं अपने एफ रमाते हैं कि "पूर्ण हिदायत के प्रकाशन के बारे में याद रखना चाहिए कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो नेअमत और धर्म की पूर्णता हुई " (अर्थात धर्म पूर्णता तक पहुँचा।) "तो इस के दो रूप हैं। प्रथम हिदायत का समापन दूसरा पूर्ण हिदायत का प्रकाशन।" (अर्थात पूर्ण हिदायत मिली। हिदायत अपनी पूर्णता को पहुंची और दूसरा उसका जो प्रकाशन है वह भी अपने समापन को पहुंचा।) फरमाया कि "हिदायत का समस्त रूप से पूर्ण होना आप के प्रथम आगमन से हुआ और प्रकाशन का पूर्ण रूप से होना आप के द्वित्तीय आगमन से हुआ।"(आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में शरीयत उतरी और हिदायत पूर्ण हो गई और जो आपका दूसरा आगमन होना था वह मसीह मौऊद जो आप का सच्चा ग़ुलाम आना था उसके ज़माने में इस का प्रकाशन होना था) फरमाया "क्योंकि सूरह जुम्म: में जो اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ वाली आयत आप के फैज़ और शिक्षा से एक अन्य क़ौम के तय्यार करने की हिदायत करती है इस से साफ पता चलता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक और प्रादुर्भव है और यही कारण है कि इशाअत के सभी साधन और सिलसिले

पूर्ण हो रहे हैं। प्रैस की प्रचुरता और आए दिन इन में नई बातों का पैदा होना, डाकखानों, तार, रेलों, जहाज़ों का आरम्भ और अख़बारों का प्रकाशन। इन सब बातों ने मिल मिला कर दुनिया को एक शहर के आदेश में पर दिया है।" (दुनिया इकट्ठी हो गई है और आज इस ज़माने में तो सोशल मीडिया इन्ट्रनेट टेलीवीज़न और विभिन्न चीज़ों आदि से और भी इकट्ठी हो गई हैं।) फरमाया कि "अत: ये उन्नतियां वास्तव में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ही तरक्कियां हैं क्योंकि इस से आप की पूर्ण हिदायत के कमाल का दूसरा भाग हिदायत की इशाअत की पूर्णता पूरी हो रही है।"

फिर मूसवी और मसीहे मुहम्मदी में एक और समानता का वर्णन करते हुए आप फरमाते हैं

" और यह उसी के अनुसार है जैसा कि मसीह ने कहा था कि मैं तौरात को पूरा करने आया हूं और मैं कहता हूं कि मेरा एक काम यह भी है कि हिदायत के प्रकाशन की पूर्णता करूं।....." फरमाया कि, "इसके अलावा, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ज़माना में जो अपदाएं पैदा हो गई थीं उसी प्रकार की यहां भी मौजूद हैं। अन्दरूनी रूप से यहूदियों की हालत बहुत बिगड़ गई थी और तारीख़ से इस बात की गवाही मिलती है कि तौरात के आदेश मानने उन्होंने छोड़ दिए थे और उस के स्थान पर तालमूद और बुज़र्गों की रिवायतों पर अधिक ज़ोर देते थे। उस समय मुसलमानों में भी इसी प्रकार की हालत पैदा हो गए हैं। अल्लाह की किताब को छोड़ दिया गया है और इस के स्थान पर रिवायतों और किस्सों पर ज़ोर दिया जाता है।"

फिर आप फरमाते हैं।

" इन सब के अतिरिक्त एक और भेद भी है जो (इस) समानता को पूर्ण कर देता है। (एक और भेद है जो इस समानता को पूरा कर देता है।)" और वह यह कि हज़रत मसीह चरित्र की शिक्षा पर ज़ोर देते थे और मूसा के जिहादों का सुधार करने के लिए आए थे। उन्होंने कोई तलवार नहीं उठाई। मसीह मौऊद के लिए भी यही निर्दिष्ट था कि वह इस्लाम के गुणों को व्यवहार की सच्चाई से स्थापित करे और उस आरोप को दूर करे जो इस्लाम पर उसी रूप में किया जाता है कि वह तलवार के ज़ोर से फैलाया गया है। यह आरोप मसीह मौऊद के समय में बिल्कुल उठा दिया जाएगा।" अर्थात मसीह मौऊद उस के ख़िलाफ काम करेगा बल्कि यह कहेगा कि इस्लाम प्यार और मुहब्बत की शिक्षा देता है और उसी से फैलेगा। इसलिए मसीह मौऊद के ज़माना में यह आरोप समाप्त हो जाएगा।)" क्योंकि वह इस्लाम की ज़िन्दा बरकतों और फैज़ से इस की सच्चाई को दुनिया पर प्रकट करेगा और इस से यह प्रमाणित होगा कि जिस तरह आज इस तरक्की के ज़माने में इस्लाम केवल अपनी पवित्र शिक्षा और बरकतों और परिणामों और फैज़ से लाभदायक और लाभप्रदत है इसी प्रकार हर ज़माने और युग में पाया गया। क्योंकि यह ज़िन्दा मज़हब है। यही कारण है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब आने वाले मसीह की भविष्यवाणी फरमाई इस के साथ ही यह भी फरमाया يَضَعُ الْحَرْب वह लड़ाइयों को समाप्त कर देगा।"( ख़त्म कर देगा।) अब इन सारी ग्वाहियों को जमा करो और बताओ कि क्या आवश्यकता नहीं कि इस समय कोई आसमानी मर्द दुनिया में नाज़िल हो? जब यह मान लिया कि सदी के सिर पर मुजद्दिद आना ज़रूरी है तो इस सदी पर तो मुजद्दिद तो ज़रूर होगा। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की समानता मूसा अलैहिस्सालम से है तो इस समानता की दृष्टि से इस सदी का मुजद्दिद मसीह है क्यों चौदहवीं सदी पर मूसा के बाद आया था और आज कल चौदहवीं सदी है।

(मल्फूज़ात, भाग 4, पृष्ठ 9-12, संस्करण 1 9 85 ई यू.के)

फिर इस बात को वर्णन करते हुए कि अगर मेरा इन्कार करते हो, तो तुम वास्तव में अल्लाह तआला और उसके रसूल का इंकार कर रहे हो। आप फरमाते हैं, "मेरा इंकार मेरा इंकार नहीं है, लेकिन यह अल्लाह तआला और उसके रसूल का इंकार है। क्योंकि जो कोई मुझे झुठलाता है, वे मुझे झुठलाने से पहले अल्लाह की पनाह अल्लाह तआला को झूठा ठहरा लेता है। जबकि वह देखता है कि आंतरिक और बाहरी शरारत सीमा से बढ़े हुए हैं और ख़ुदा तआला ने बावजूद वादा اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحَافِظُوْنَ (अल-हिजर: 10) के इन के सुधार का कोई प्रबंध न किया जाए जब कि वह इस बात पर जाहिरी तौर पर ईमान लाता है कि ख़ुदा तआला ख़लीफा बनाने वाली आयत में वादा किया था कि मूसवी सिलसिला के तरह इस मुहम्मदी सिलसिला में भी ख़लीफाओं को सिलसिला स्थापित करेगा। परन्तु अल्लाह की पनाह इस ने इस वादा को पूरा न किया। और इस समय कोई ख़लीफा इस उम्मत में नहीं और न केवल यहां तक है बल्कि इस बात से भी इंकार करना पड़ेगा कि कुरआन शरीफ ने जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मूसा का प्रतिरूप करार दिया है यह भी सही नहीं है। अल्लाह की पनाह। क्योंकि इस सिलसिला की पूर्ण समानता के लिए आवश्यक था कि इस चौदहवीं सदी में इसी उम्मत में से एक मसीह पैदा होता इस तरह पर जैसा कि मूसवी सिलसिला में चौदहवीं सदी पर एक मसीह आया और इसी प्रकार कुरआन शरीफ की इस आयत को भी झुठलाना पड़ेगा اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अल-जुम्अ: 4) में एक आने वाले अहमदी प्रतिरूप का ख़बर दी देती है। और इसी प्रकार कुरआन की बहुत सी आयतें हैं जिन का इंकार अनिवार्य होगा....." फरमाया "फिर सोचो क्या मेरा इंकार कोई आसान मामला है। यह मैं ख़ुद नहीं कहता। ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि जो मुझे छोड़ेगा और मेरा इंकार करेगा वह ज़बान से न करे परन्तु अपने व्यवहार से सारे कुरआन का इंकार कर दिया और ख़ुदा का छोड़ दिया।

फिर आप फरमाते हैं कि "मेरा इंकार मेरा इंकार नहीं। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंकार है। अब कोई इस से पहले के मेरा इंकार और विरोध करने का साहस करे थोड़ी देर अपने दिल में सोचे और इस से फत्वा मांग कि वह किस का विरोध कर रहा है।"

फिर इस बात को और अधिक खोलते हुए कि आप के इंकार से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंकार क्यों होता है? आप फरमाते हैं कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंकार क्यों होता है?(जब मैं कहता हूं कि इंकार कर रहे हो) फरमाया कि " इस तरह से कि आप( सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने जो वादा किया था कि प्रत्येक सदी पर मुजद्दिद आएगा और वह अल्लाह की पनाह झूठा निकला।। फिर आप ने जो اِمَامُكُمْ مِنْكُمْ फरमाया था वह भी अल्लाह की पनाह झूठा निकला। आप ने जो सलीबी फित्ना के समय एक मसीह का आने की ख़बर दी थी वह भी अल्लाह की पनाह ग़लत निकली। क्योंकि फित्ना तो मौजूद हो गया परन्तु वह आने वाला इमाम न आया। अब इन बातों को जब कोई स्वीकार करेगा व्यावहारिक रूप से वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंकार करने वाला ठहरेगा या नहीं?" फरमाया" अत: फिर मैं खोल कर कहता हूं कि मेरी इंकार आसान काम नहीं। मुझे काफिर कहने से पहले ख़ुद काफिर बनना होगा। मुझे नास्तिक और गुमराह कहने में देर होगी मगर पहले अपनी गुमराही और कालेपन को मान लेना पड़ेगा। मुझे कुरआन और हदीस को छोड़ने वाला कहने के लिए पहले ख़ुद कुरआन और हदीस को छोड़ना पड़ेगा और फिर भी वही छोड़ेगा। मैं कुरआन तथा हदीस की तसदीक करने वाला हूं। मैं गुमराह नहीं बल्कि महदी हूं। मैं काफिर नहीं बल्कि मैं सब से पहले ईमान लाने वाला हूं। और जो कुछ मैं कहता हूं ख़ुदा ने मुझ पर प्रकट किया है कि यह सच है। जिस को ख़ुदा पर यकीन है जो कुरआन और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सच्चा मानता है उस के लिए यही दलील काफी है कि मेरे मुंह से सुन कर ख़ामोश हो जाए। परन्तु जो दिलेर और मुंह फट है उस का क्या इलाज। ख़ुदा ख़ुद उस को समझाएगा।

( मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 14 से 16 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर मसीह मौऊद के आने के बारे में कुछ निशानियों का वर्णन करते हुआ आप फरमाते हैं कि

" वास्तव में यह रेलवे मसीह मौऊद का निशान है। कुरआन शरीफ में भी इस तरफ इशारा है وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ(अत्तकवीर 5)( कि दस माह की गाभिन उंठनी छाड़ दी जाएगी) फरमाया "नेकी तो तक्वा के साथ होती है। यह लोग अगर ग़ौर करें तो साफ मालूम होता है कि لَيُتْرَكُنَّ الْقِلَاصُ में रेल की ओर संकेत मिलता है क्योंकि अगर इससे रेल मतलब नहीं तो उन का कर्तव्य है कि वह घटना बताएं जिस से उंट छोड़ें जाएंगे। पहली पुस्तकों में भी यह इशारा है कि उस समय (मसीह के समय के दौरान) आने जाने का साधन आसान हो जाएगा। फरमया "तथ्य यह है कि इतने संकेत पूरे हो चुके हैं कि ये लोग इस मैदान से भाग ही गए हैं। जैसे चांद सूरज ग्रहण रमज़ान में क्या उसी तरीका पर नहीं हुआ जैसा कि महदी के लिए निशान निर्दिष्ट थे? इसी तरह ख़ुदा तआला की तरफ से एसी सवारी भी निकली है।" फरमाया " निशान बताते हैं कि मसीह मौऊद पैदा हो चुका है अगर ये लोग हम को नहीं मानते तो फिर किसी ओर को स्वीकार करें औ बताएं कि कौन है क्योंकि जो निशान इस के लिए निर्धारित थे वे सब पूरे हो गए।"

(मल्फूज़ात, भाग 4, पृष्ठ 54 से 55, संस्करण 1985 ई इंग्लैंड)

आप ने फरमाया, "यदि मेरी सच्चाई को परखना चाहते हो तो नबियों के सिलसिलों को परखने की जो दलीलें हैं इस के अनुसार परखो। उस तरीका पर चलो। नेक निय्यत के साथ ईमानदारी के साथ जिन दलीलों को देखो उन्हें समझो। अगर ज़िद करनी है तो फिर कुछ समझ नहीं आएगा। फिर तो कुरआन करीम भी हिदायत नहीं देता। फरमाया कि " नबुव्वत के तरीके पर इस इस सिलसिले को आज़माएं फिर देखें कि हक किस के साथ है। काल्पनिक सिद्धांतों और सुझावों से कुछ भी नहीं बनता और न मैं अपनी सच्चाई काल्पनिक बातों से करना चाहता हूं। मैं अपने दावा को नबुव्वत के तरीका पर प्रस्तुत करता हूं। फिर क्या कारण है कि इसी उसूल पर इस की सच्चाई को न प्रस्तुत किया जाए। जो दिल खोल कर मेरी बातें सुनेंगे मैं विश्वास रखता हूं कि लाभ उठाएंगे। और स्वीकार कर लेंगे। परन्तु जो दिल में द्वेष और वैर रखते हैं उन को मेरी बातें कोई लाभ नहीं पहुंचा सकेंगी। उन का तो अहवल जैसा उदाहरण है।"( अर्थात भेंगा आदमी जो होता है उस जैसा उदाहरण है जिस को एक के दो दिखाई देते हैं।)"जो एक को दो देखता है। इस को चाहे कितनी दलीलें दी जाएं कि दो नहीं एक ही है वह स्वीकार नहीं करेगा।" एक घटना सुनातें हैं। आप वर्णन फरमाते हैं कि एक भेंगा आदमी किसी का सेवक था। ( नौकर सेवक था तो) आक़ा ने उस को कहा कि अन्दर से शीशा ले आओ" (मालिक ने भेजा कि अन्दर से शीशा उठा लाओ।) वह वापस आया और आ कर कहा कि मैंने दो देखे हैं कौन सा उठा लाऊं।" आक़ा ने कहा अच्छा एक को तोड़ दे। जब तोड़ा गया तो मालूम हुआ कि वास्तव में मेरी ग़लती थी।"( क्योंकि जो उस ने तोड़ा था वह वास्तव में एक ही था। तो फरमाया) परन्तु इन अहवलों को जो मेरे मुकाबला में हैं क्या उत्तर दूं? अत: हम देखते हैं कि ये लोग बार बार अगर कुछ प्रस्तुत करतें हैं तो हदीसों का ढेर, जिस को ख़ुदा ये कल्पना का स्तर से आगे नहीं बढ़ाते। इन को मालूम नहीं कि एक समय आएगा जब इन के कूड़ा कर्कट पर लोग हंसी करेंगे। ये प्रत्येक सच्चाई के इच्छुक का हक है कि हम से हमारे दावे का सबूत मांगे। इसी लिए हम वही प्रस्तुत करते हैं जो नबियों ने पेश किया। कुरआन की आयतें और हदीसें और अक्ली दलीलें अर्थात मौजूदा ज़रूरतें जो सुधारक को चाहती हैं फिर वे निशान जो ख़ुदा ने मेरे हाथ पर प्रकट किए" फरमाया कि " मैंने एक नक्शा बना दिया है इस में डेढ़ सौ के लगभग निशान दिए हैं जिन के गवाह एक तरीके से करोड़ों लोग हैं" फरमाया कि " व्यर्थ बातें प्रस्तुत करना नेक आदमियों का काम नहीं।" आप फरमाते हैं कि " आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसीलिए फरमाया था कि वह हकम हो कर आएगा। उस का फैसना स्वीकार करो। जिन लोगों के जिलों में शरारत होती है वो चूंकि मानना नहीं चाहते इस लिए बेहूद दलीलें और आरोप प्रस्तुत करते रहते हैं परन्तु वे याद रखें कि आख़िर ख़ुदा तआला अपने वादा के अनुसार ज़ोरदार हमलों से मेरी सच्चाई प्रकट कर देगा ।" फरमाया कि " मैं विश्वास रखता हूं कि अगर मैं झूठ बोलता तो वह मुझे शीघ्र हलाक कर देता। परन्तु सारा कारोबार उस का अपना कारोबार है और मैं उसी की तरफ से हूं। मेरा इंकार उस का इंकार है। इसलिए वह ख़ुद मेरी सच्चाई प्रकट कर देगा।

(मल्फूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 34 से 35, संस्करण 1985 मुद्रित यू. के)

मौलवियों जो ज़िद्द की हालत है जैसा कि हम देखते हैं वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में भी थी जो आप ने वर्णन की है। न दलील से बात करना चाहते हैं न समझना चाहते हैं। वही हालत इन की आज भी है।

इन निशानों को और अधिक वर्णन करते हुए आप फरमाते हैं कि " प्रथम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कुरआन शरीफ ने तौरात की भविष्यवाणी के अनुसार मूसा का प्रतिरूप स्वीकार किया है। इस समानता की दृष्टि से यह ज़रूरी है कि जिस तरह से"( जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है)" मूसवी ख़लीफों का सलिसिला स्थापित हो। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद भी एक ख़िलाफत का सिलसिला स्थापित हुआ। अगर और अन्य कोई भी दलील इस के लिए न हो तब भी यह समानता अपने आप चाहती है कि एक ख़लीफाओं का सिलसिला हो"( दूसरे यह कि)" आयत इस्तिख़लाफ में अल्लाह तआला ने साफ तौर पर एक सिलसिला ख़िलाफत स्थापित करने का वाादा फरमाया और इस सिलसिला को पहले सिलसिला के समरूप बनाया। जैसा कि फरमाया كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ " फरमाया कि " अब इस वादा इस्तिख़लाफ के अनुसार और इस की समानता के अनुसार से ज़रूरी था कि जैसे मूसवी सिलसिला का ख़ातमुल ख़ुलफा मसीह था। ज़रूर था कि इस सिलसिला मुहम्मदिया के ख़ुल्फा का ख़ातम भी एक मसीह ही हो।"( तीसरी बात यह है) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी यही फरमाया إِمَامُكُمْ مِنْكُمْ तुम में से तुम्हारा इमाम होगा।"(चौथी बात)" आप ने यह भी फरमाया कि प्रत्येक सदी के सिर पर एक मुजद्दिद धर्म के सुधार के लिए भेजा जाता है। अब इस सदी का मुजद्दिद होना ज़रूरी था और मुजद्दिद का जो काम होता है वह ज़माना के उपद्रवों का सुधार होता है।"( जो वर्तमान फसाद पैदा हुआ है इस का सुधार करना।)अत: जो फसाद और फित्ना इस समय सब से बढ़ कर है वह इसाई फित्ना है इसलिए ज़रूरी है किर इस सदी का मुजद्दिद हो वह सलीब को तोड़ने वाला हो। जिस का दूसरा नाम मसीह मौऊद है।"(पांचवीं बात यह कि)" मूसवी सिलसिला की समानता की दृष्टि से भी ख़ातमुल ख़ुलफा का सिलसिला मुहम्मदिया का चौदहवीं सदी ही में होना ज़रूरी है क्योंकि मूसा अलैहिस्सालम के बाद चौदहवीं सदी में मसीह अलैहिस्सलाम आए थे।"(छठी बात यह कि)" जो निशानियां मसीह मौऊद का वर्णन की गई थीं इन में से बहुत सी पूरी हो चुकीं जैसे चांद सूरज ग्रहण का ऱमज़ान में होना। जो दो बार हो चुका। हज्ज का बन्द होना। ताऊन का निकलना। रेलों का जारी होना, ऊंटों का बेकार हो जाना इत्यादि। " (सातवीं बात यह कि)" सूरत फातिहा की दुआ से भी यही प्रमाणित होता है कि इस उम्मत में से होगा। अत: एक दो दलीलें नहीं सैंकड़ों दलीलें इस बात पर आधारित हैं कि आने वाला इसी उम्मत में से होगा और उस का यही समय है। अब ख़ुदा तआला के इल्हाम और वह्यी से मैं कहता हूं जो आने वाला था वह मैं हूं। पुराने ज़माने से अल्लाह तआला ने नबुव्वत के तरीके पर जो सबूत का तरीका रखा हुआ है वह मुझ से जिस का दिल चाहे ले ले। जो निशान मेरे समर्थन में प्रकट हुए हैं उन को देख लो। मुझे अफसोस होता है जब मैं इन विरोधियों की हालत पर नज़र करता हूं जिन बातों को बतौर निशान के पेश किया करते थे अब जब वे पूरे हो गए तो उन की प्रमाणिकता पर शक करते हैं।(जैसे चांद सूरज ग्रहण की निशानी मांगा करते थे।) आप फरमाया हैं कि" जैसे चांद सूरज वाली पेशगोई को अब कहते हैं कि यह हदीस सही नहीं है। मगर कोई उन से पूछे कि जिस हदीस को अल्लाह तआला ने सहीह साबित कर दिया क्या वह अब उन के झूठा कहने से झूठी हो जाएगी।? " आप फरमाते हैं कि" अफसोस तो यह है कि इतना कहते हुए इन को शर्म नहीं आती कि इस से हम मसीह मौऊद की प्रमाणिकता को झुठलाते हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंकार कर रहे हैं। मेरी सत्यता और प्रमाणिकता के लिए एक चांद सूरज ग्रहण ही नहीं हज़ारों दलीलें और निशान हैं और अगर एक न भी होता तो कुछ भी न बिगड़ता। परन्तु इस से यह तो पा जाएगा कि यह पेशगोई ग़लत हुई। अफसोस यह लोग मेरे इंकार में सब से सच्चे की पेशगोई को झूठा करना चाहते हैं । हम इस पेशगोई को बड़े ज़ोर से पेश करते हैं। यह हमारे आक़ा की सच्चाई का निशान है।" फरमाया कि " अत: हदीस जिस का तुम ज़न की स्याही से लिखते थे घटना ने इस की सच्चाई को वर्ण कर दिया है। अब इस से इंकार करना बेईमानी और लअनत है। मूज़अ हदीसों में क्या मुहद्दिस यह कह देते हैं कि हम ने चोर पकड़ लिया है बल्कि यही कहेंगे कि इस की याद-दाशत ठीक नहीं हैं( जो हदीसें सही नहीं इन में यही कहतें हैं कि किसी की याददाशत ठीक नहीं है) "या सच्चा होने में शंका है।"(इस के सच्चा होने में कुछ शंका है।) फरमाया कि "परन्तु मुहद्दिसीन ने सह उसूल निर्धारित किया है कि अक हदीस अगर कमज़ोर भी हो"(कमज़ोर हदीस भी अगर नज़र आती हो।) " परन्तु उस की पेशगोई अगर पूरी हो जाए तो वह सही होती है। फिर इस स्तर पर कोई क्योंकर यह कहने का साहस कर सकता है कि यह हदीस सही नहीं? " फरमाते हैं अत: याद रखों कि आने वाला तो स्पष्ट आयतों से पहचाना जा सकता है वे इस का समर्थन करती है और अक्ल चूंकि उदाहरण के बिना नहीं मानती।" (बिना उदाहरण के इस की गवाही के अक्ल किसी चाज़ को नहीं मानती तो)" अक्ल के उदाहरण इस के साथ होते हैं।"(जो उदाहरण साथ दिए जाते हैं वे भी अक्ली उदाहरण हैं और ग्वाहियां दी जाती हैं।) फरमाया " और सब से बढ़े कर अल्लाह तआला का समर्थन उस के साथ होती हैं अगर किसी को कोई शंका हो तो वह मेरे सामने आए। और उन तरीकों से जो नबुव्वत के तरीके हैं मेरी सच्चाई का सबूत मुझ से ले। मैं अगर झूठा हूं तो भाग जाऊंगा। मगर नहीं अल्लाह तआला ने उन्नीस वर्ष पहले( जब आप ने यह लिखा आप के दावा पर उन्नीस वर्ष गुज़र चुके थे आप एक इल्हाम का वर्णन कर रहे हैं कि अल्लाह तआला ने उन्नीस वर्ष पहले)" मुझे कहा يَنْصُرُكَ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ ( जब आप ने यह लिखा था उस से उन्नीस वर्ष पहले यह इल्हाम हुआ था يَنْصُرُكَ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ कि ख़ुदा कई मैदानों

शेष पृष्ठ 11 पर

# ख़ुत्बः जुमअः

**यह बात हमेशा हमारे एक मोमिन को सामने रखनी चाहिए कि सांसारिक चीज़ों की मुहब्बत एसी न हो जो ख़ुदा तआला को भुला दे।**

**आज, जो मुस्लिम देशों में उपद्रव की अवस्था है वह इसलिकए है कि अल्लाह तआला ने जो धर्म से हटे हुए हैं और सांसारिक लोगों की हालत बताई थी वह मुसलमानों की है। लीडर हैं तो दौलत समेटने के लिए जनता की सेवा का नारा लगा कर हुकूमत में आते हैं फिर दोनों हाथों से वह लूट मचाते हैं कि कल्पना से बाहर है उलमा को लोगों के धर्म की चिन्ता कम। वास्तविक कोशिस यह है कि धर्म के नाम पर लोगों को अपने पीछे चलाएं और किसी तरह हुकूमत में आएं लाभ उठाएं और दौलत इकट्ठी करें और जायदाद बनाएं। नाम तो यह अल्लाह तआला का लेते हैं, लेकिन अल्लाह तआला के डर का कोई भी प्रकटन उनके कर्मों से नहीं हो रहा होता। पाकिस्तान में यह स्थितियां साधारण देखने को मिलते हैं।**

**अल्लाह तआला, उन शासकों को, उन राजाओं को, उन स्वार्थयों को, अक्ल दे कि वे दौलत समेटने के स्थान पर उचचि प्रयोग करने वाले हो। इस को सहीह इस्तेमाल करने वाले हो इस से जहां यह ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले हो वहां सांसारिक रूप से भी इन में ताकत होगी।**

**एक मोमिन का काम है सांसारिक चीज़ों पर गर्व करने और इसको हासिल करने के लिए अपने सभी प्रयासों को करने के बजाय, अल्लाह तआला की प्रसन्नता और इच्छा को तलाश करे।**

**कुछ देश बड़े देशों की पनाह में आना चाहते हैं उन को ख़ुदा बना लेते हैं. ये सब चीज़ें समाप्त होने वाली हैं।**
**मुस्लिम देशों के नेता जो सांसारिक इच्छाओं के पीछे पड़े हुए हैं और जिन्होंने वास्तव में सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला के बजाय बड़ी शक्तियों को अपना ख़ुदा बनाया हुआ है और समझते हैं कि उनसे दोस्ती हमारे अस्तित्व और विकास की गारंटी बन सकती है**

**लेकिन जब अल्लाह तआला की तरफ से गिरावट आती है, तो फिर सांसारिक दोस्ती और संधियां काम नहीं करतीं। ऐसा लगता है कि अब ये बड़ी शक्तियों पर, और विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में काम शुरू हो चुका है, और परिणाम कब आता है, यह अल्लाह तआला सबसे अच्छी तरह जानता है। लेकिन मुसलमानों को एक साथ लड़ाने का प्रयास अब इन स्थितियों में और अधिक तेज़ हो जाएगा, इसलिए मुसलमान दुनिया के लिए दुआ करनी चाहिए कि ख़ुदा उन्हें अक्ल दे ।**

**सबसे बढ़ कर हमें यह दुआ करनी चाहिए कि मुसलमान अल्लाह तआला के भेजे हुए मसीह मौऊद और मेहदी मौऊद को पहचानें जिस के साथ जुड़ कर ये आपस में भी दुनिया में भी अमन स्थापित करने वाले हों।**

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 8 दिसंबर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَ الْبَنِيْنَ وَ الْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَ الْفِضَّةِ وَ الْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ الْاَنْعَامِ وَ الْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ

(सूरत आले इमरान 15)।

इस आयत का अनुवाद यह है कि लोगों के लिए अपने आप पसन्द की जाने वाली चीज़ों की अर्थात औरतों की और औलाद की और ढेरों ढेर सोने चांदी की और स्पष्ट निशान के साथ दाग़े हुए घोड़ों की और मवेशियों, और खेतों की मुहब्बत सुंदर रूप से कर के दिखाई गई है। यह सांसारिक जीवन का एक अस्थायी सामान है और अल्लाह वह है जिसके पास बहुत बेहतर लौटने का स्थान है।

अल्लाह तआला ने यह नक्शा खींचा है या उन लोगों की हालत बयान की है जो ख़ुदा तआला को भूल जाते हैं और दुनिया का अधिग्रहण ही उनका लक्ष्य होता है और जब इंसान ख़ुदा तआला को भूलता है फिर शैतान उस पर कब्ज़ा कर लेता है। यद्यपि ये सब चीज़ें ख़ुदा तआला की पैदा करने वाली हैं और अल्लाह तआला की नेअमतों में से हैं और उनसे लाभ उठाना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने भी हमें बड़े स्पष्ट रूप से फरमाया कि दुनिया के कारोबार से अलग होना भी ग़लत है। शादियां करनी भी ज़रूरी हैं और ये सुन्नत है। इसी तरह दूसरे काम हैं। सहाबा भी क्या करते थे। कुछ सहाबा की करोड़ों की जायदायदें परन्तु वह दुनिया के चाहने वाले न थे। दुनिया पर गिरे हुए नहीं थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"याद रखो कि ख़ुदा कि यह हरगिज़ इच्छा नहीं कि तुम दुनिया को बिल्कुल दुनिया को छोड़ दो बल्कि इस की जो इच्छा है वह यह है कि قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا (अश्शमस 10) "(अर्थात जिस ने नफस को पाक किया वह अपने लक्ष्य को पा गया।) आप फरमाते हैं कि "व्यापार करो, खेती करो, रोकनी करो और व्यवसाय करो। जो चाहो करो परन्तु नफस को ख़ुदा की नाफरमानी से रोकते रहो और ऐसी पवित्रता करो कि यह मामले तुम्हें ख़ुदा से वंचित न कर दें।"

(मल्फूज़ात जिल्द 10 पृष्ठ 260-261 प्रकाशन 1985 ई यू. के )

अत: ये बात हमेशा एक मोमिन को अपने सामने रखनी चाहिए कि दुनिया की मुहब्बत एसी न हो जो ख़ुदा तआला को भुला दे। जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया इस आयत زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ कि लोगों के लिए काम वासनाओं की मुहब्बत सुन्दर कर के दिखाई गई है। और फिर आगे इस का विस्तार भी कि कौन कौन सी चीज़ें हैं और ये चीज़ें ऐसे लोग सिर्फ गुज़ारे के लिए नहीं चाहते बल्कि ये इंसानों का ज़िक्र जो दुनिया में डूबे हुए हैं और सिर्फ इन चीज़ों के प्राप्त करने की फिक्र है।

शहवत का मतलब है किसी चीज़ की बहुत तीव्र इच्छा और चाहत और हर समय इसकी चिन्ता करते रहना है। इसका यह अर्थ भी है कि ऐसी चीज़ या उद्देश्य केवल नफसानी इच्छाओं पर आधारित हो। घटिया हो, या कामुक इच्छा बढ़ी हुई हो इस को भी शहवत कहते हैं। अत: अल्लाह तआला ने यहां फरमाया है कि इन चीज़ों की मुहब्बत इंसान के दिल में डाली गई है तो यह मुहब्बत अल्लाह तआला की तरफ से नहीं है। इस की नेअमतों से लाभ उठाने वाली बात नहीं है बल्कि यह शैतान की तरफ से है। यह साधारण चाहत या पसन्द नहीं है या सुन्दरता नहीं है बल्कि इस सीमा तक इस सुन्दरता की चाहत और इच्छा है कि इंसान इस को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक समय बेचैन तथा व्याकुल रहता है एक ग़ैर मामूली प्यार इन सांसारिक चीज़ों से करता है अत: जब इस सीमा तक इंसान इन चीज़ों में डूब जाए तो फिर यह अल्लाह तआला की नेअमतें नहीं रहतीं बल्कि यह शैतानी इच्छाएं हैं और फिर इन को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक नाजायज़ तरीका इंसान धारण करता है और यह हम दुनियादारों में प्राय देखते हैं। दौलत के लिए, सांसारिक सम्मान के लिए, औरतों से अवैध सम्बन्ध के लिए ये लोग सारी सीमाएं पार कर देते हैं या शादी ब्याह भी करते हैं तो दौलत प्राप्त करने के लिए। इच्छा यह होती है कि दौलत मंद बीवी ले कर आएं। इस प्रकार दूसरे कामों में केवल और केवल दुनिया समक्ष होती है। बावजूद इस के कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को इस प्रकार की सुन्दर तथा पवित्र शिक्षा दी है और होशियार भी किया है कि इन चीज़ों से बचो अर्थात् की इस सीमा तक न जाओ कि यह तुम्हारी ज़िन्दगी का उद्देश्य बन जाए क्योंकि यह दुनिया के अस्थायी सामान हैं। अपनी चिन्ता करो कि तुम ने अल्लाह तआला की तरफ लौटना है इस के समक्ष हाज़िर होना है। बद किस्मत से हम मुसलमानों की अधिकतर को देखते हैं कि इन सांसारिक चीज़ों के पीछे पड़े हुए हैं। और अपने जीवन के उद्देश्य को भूल गए हैं। उलमा भी, क़ौम के मार्गदर्शक भी और प्रत्येक वो आदमी जिस को अवसर मिलता है उस की कोशिश होती है कि जिस प्रकार भी हो कि वह दुनिया का माल प्राप्त करे। जब इस प्रकार कि इच्छाएं क़ौम के लीडरों में पैदा हो जाएँ तो फिर मुल्कों और क़ौमों को भी नुकसान भी पैदा होना शुरू हो जाता है। आज कल मुसलमान मुल्कों में जो फसाद की हालत है वह इसलिए है कि अल्लाह तआला के धर्म से हटे हुओं की और दुनियादारों की जो हालत बताई थी वह मुसलमानों की है। लीडर हैं तो दौलत समेटने के लिए जनता की सेवा का नारा लगा कर हुकूमत में आते हैं फिर दोनों हाथों से वह लूट मचाते हैं कि कल्पना से बाहर है उलमा को लोगों के धर्म की चिन्ता कम। वास्तविक कोशिस यह है कि धर्म के नाम पर लोगों को अपने पीछे चलाएं और किसी तरह हुकूमत में आएं लाभ उठाएं और दौलत इकट्ठी करें और जायदाद बनाएं। नाम तो यह अल्लाह तआला का लेते हैं, लेकिन अल्लाह तआला के डर का कोई भी प्रकटन उनके कर्मों से नहीं हो रहा होता । पाकिस्तान में यह स्थितियां साधारण देखने को मिलते हैं। मुसलमान लीडर मुसलमान अवाम को गाजर मूली की तरह कत्ल कर रहे हैं। कोई सम्मान इंसानी जान की नहीं है परन्तु हुकूमत नहीं छोड़ते कई देशों में इस प्रकार की हरकतें हो रही हैं और कोशिश है कि हम हुकूमत में बैठे रहें और अपनी ताकत को प्रकट भी करते रहें और दौलत भी समेटते रहें। किसी तरह इन का पेट नहीं भरता। क्या कारण है कि कई मुसलमान देशों के पास दौलत भी है कुदरती संसाधन भी हैं और फिर भी एसी अवस्था है कि ग़रीब ग़रीब होता जा रहा है और एक समय की रोटी मुश्किल से मिलती है। सऊदी अरब को यह बहुत अमीर देश कहते हैं परन्तु वहां भी अब ग़रीबी बढ़ती जा रही है। पहले भी ग़रीब थे और अब और अधिक बढ़ते चले जा रहे हैं। तेल की दौलत के बावजूद ग़रीबी की चरम हो रही है। केवल शहज़ादों के अमीरों के लीडरों की अवस्था ठीक है। वह एक दिन में कई कई मिलयन डालर खर्च कर देते हैं। ये दौलत भी नाजायज़ तरीके से प्राप्त करते हैं या ग़रीब का हक मार कर प्राप्त करते हैं और खर्च भी नाजायज़ तरीके से करते हैं। अल्लाह तआला उन लोगों को, उन हुकमरानों को, उन बादशाहों को, उन स्वार्थ परस्तों को अक्ल दे कि वे दौलतें समेचने की बजाय दौलत का उचित प्रयोग करने वाले हों। इस का उचित प्रयोग करने वाले हों। इस से जहां यह ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले हों वहां सांसारिक रूप से भी न की एक ताकत होगी। ग़ैर मुस्लिम ताकतें उन को अपने पीछे चलाने के स्थान पर और आंखें दिखाने के स्थान पर उन की बात मानने वाली होंगी आज जो एक बड़ा शोर है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ने अपने दूतावास को यरूशलेम ले जाने के लिए कहा है और राजधानी को स्वीकार करने की घोषणा की है। वास्तव में तो, वहां इस्राइल के सारे दफतर पहले से ही हैं लेकिन बाहर की दुनिया ने इसे स्वीकार नहीं किया था। इस घोषणा के बाद, बाहरी दुनिया में एक बड़ा शोर है लेकिन अगर वे शोर कर रहे हैं, सरकारें भी विरोध कर रही हैं, लेकिन यह सब कुछ मुसलमानों की कमज़ोरी के कारण है। मुस्लिम देशों के बीच के युद्ध हैं और देशों के अन्दर बेचैनियां जो हैं इस ने ग़ैर को यह अवसर दिया है कि यह हालात पैदा करें और इस प्रकार से इस के एलान करें। अमेरिकी राष्ट्रपति यह चाहता है कि मुस्लिम विश्व में आपस में शांति कभी न हो और यह अपनी मन मानी करते रहें। ध्यान में रखना चाहिए। सऊदी अरब अब घोषणा कर रहा है कि अमेरिकी राष्ट्रपति का निर्णय किसी भी तरह से स्वीकार्य नहीं है। सऊदी अरब यह घोषणा कर रहा है कि अमरीका सदर का यह एलान किसी भी प्रकार स्वीकार के योग्य नहीं। कुछ दिन पहले उन की हर बात में हां में हां मिला रहा था। ईरान के ख़िलाफ घोषणा पर संयुक्त राज्य अमेरिका की हां में हां मिला रहा था। उस समय उसे रोकना चाहिए था कि हम हर मुस्लिम देश के साथ हैं। इसलिए, हम किसी भी बड़े मुसलमान देश के ख़िलाफ किसी भी प्रकार की कार्रवाई को बर्दाश्त नहीं करेंगे। इसी तरह, जो लोग यमन के ख़िलाफ कार्रवाई कर रहे हैं, इस में भी बड़ी शक्तियों के साथ मदद कर रहे हैं। वहां अपनी शक्ति के प्रदर्शन के लिए क्षेत्र में अपनी बदाशाहत के रौब के लिए अमरीका की हां में हां मिलाई। दुनिया के अस्थायी सामानों के लिए ख़ुदा तआला के आदेशों से दूर चले गए। अब अल्लाह तआला के आदेशों की नाफरमानी का यही नतीजा निकलना था जो निकल रहा है। फिर ये लोग सिर पर चढ़ते तले जाते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उन लोगों का उदाहरण जो केवल दुनिया की तलाश में रहते हैं और सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति की चिंता में रहते हैं इस खुजली वाले रोगी से दी है जिसे खुजलाने से सुख मिलता है और वह समझ रहा होता है कि मुझे अपने शरीर को खुजला कर बहुत राहत मिलती है, और इस तरह वह अपने शरीर को घायल कर लेता है। खुजलाने से अस्थायी रूप से उसे राहत प्राप्त हो रही होती है जबकि उसकी त्वचा उधड़ रही होती है और कुछ अपना बहुत अधिक ख़ून वहा लेते हैं।

(मल्फूज़ात भाग1 पृष्ठ 155 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: ये चीजें हैं जिस की इंसान आवश्यकता से अधिक इच्छा करता है ये अन्त में बेचैनियों के सामान पैदा कर रही होती हैं। ये लोग समझते हैं कि हमारी ताकत बढ़ रही है या हमारे गिरोह बढ़ रहे हैं। परन्तु वास्तव में ये लोग अपना ही ख़ून निकाल रहे होता हैं। अल्लाह तआला की नाराज़गी इस के अतिरिक्त है। इस विषय को अल्लाह तआला ने दूसरे स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया है।اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا وَ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ وَّ مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ(अल्हदीद 21) कि जान लो कि दुनिया का जीवन केवल खेल कूद और नफसानी इच्छाओं को पूरा करने का एक ऐसा तरीका है जो उच्च उद्देश्य से ग़ाफिल कर दे और सज धज और एक दूसरे से मुकाबला करना है। और मालों और औलाद में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करना है। इस जिन्दगी का उदाहरण इस बारिश की तरह है जिस की हरियाली कुफ्फार के दिलों को लुभाती है। अत: वह तेज़ी से बढ़ती है और तू उसे पीला होते हुए देखता है फिर वह खण्डित हो जाती है। और आख़िरत में सख्त अज़ाब मुकद्दर है और अल्लाह तआला की तरफ से मग़फिरत और रिज़वान भी है जब कि दुनिया की ज़िन्दगी तो धोखे का एक अस्थायी सामान है।

अत: एक मोमिन का काम है कि दुनियावी चीज़ों पर गर्व करने और इस को प्राप्त करने की लिए अपनी सारी कोशिशे खर्च करने के स्थान पर अल्लाह तआला की मग़फरत और इच्छा को तलाश करे और खारिश के मरीज़ की तरह बन कर अपना जीवन और परलोक ख़राब न करे।

इस दुनियावी ज़िन्दगी के सामानों और इस की हालत का नक्शा खींचते हुए एक मज्लिस में एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"जितना इंसान कशमकश से बचा हुआ हो उतनी ही उस की इच्छाएं पूरी होती हैं।"(अर्थात संसारिक इच्छाएं , उस के लिए कोशिशें।) फरमाया "कशमकश वाले के सीने में आग होती है और वह मुसीबत में पड़ा होता है. इस दुनिया की ज़िन्दगी में यही आराम होता है कि कशमकश से मुक्ति मिले।"(ज़रूरत से अधिक जो दुनिया के लिए कोशिशें हों उस से मुक्ति मिले।) आप फरमाते हैं कहते हैं "एक आदमी घोड़े पर सवार चला जा रहा था। रास्ते में एक फकीर बैठा हुआ था जिस ने मुश्किल से अपनी शर्म योग्य स्थान को ढांपा हुआ था।"(थोड़े से कपड़े थे मुश्किल से अपने नंग को ढांपा हुआ था। ) "उस ने उस से पूछा।"( उस सवार ने) "कि साईं जी क्या

हाल है फकीर ने उस से कहा कि जिस की सारी मुरादें पूरी हो गई हों उस का क्या हाल हो सकता है। उसे( सवार को बड़ा) आश्चर्य हुआ कि तुम्हारी सारी इच्छाऐं किस प्रकार पूरी हो गई हैं। फकीर ने कहा कि जब सारी इच्छाएं छोड़ दीं तो मानो सारी मिल गईं।" आप फरमाते हैं "सारांक्ष यह है कि जब यह सब कुछ प्राप्त करना चाहते हो तो तकलीफ ही होती है परन्तु जब किनाअत कर के सब कुछ छोड़ दे तो मानो सब कुछ मिलना होता है।" फरमाते हैं कि "नजात और मुक्ति यही है कि आन्नद हो। दु:ख न हो दु:ख वाला जीवन तो न इस संसार के लिए अच्छा होता है और न उस संसार के लिए।" आप फरमाते हैं कि "..... यह जीवन तो बहरहाल समाप्त हो जाएगा क्योंकि यह बर्फ के टुकड़े की तरह है चाहे इस को किसी भी संदूक और कपड़ें में लपेट कर रखो वह पिघलती चली जाती है।"(आप ने बर्फ के साथ ज़िन्दगी का उदाहरण दिया कि इस प्रकार कम होती चली जाती है।) फरमाते हैं कि "इसी तरह से चाहे ज़िन्दगी के चिर स्थायी रखने के लिए जितनी भी कोशिश की जाएं परन्तु सच्ची बात यह है कि वह समाप्त हो जाती है और दिन प्रतिदिन कुछ न कुछ फर्क आता जाता है। दुनिया में डाक्टर भी हैं वैद्य भी हैं परन्तु किसी ने उम्र का नुस्ख़ा नहीं लिखा।"( कोई यह नुस्ख़ा लिख कर नहीं दे सकता कि हमेशा इंसान जीवित रहेगा और इतनी उम्र होगी। आप फरमाते हैं कि जब इंसान बूढ़ा हो जाता है तो उन को ख़ुश करने के लिए अन्य लोग आ जाते हैं और कह देते हैं कि अभी तुम्हारी आयु क्या है(थोड़ी सी उम्र है साठ सत्तर साल की उम्र है यह भी कोई उम्र है इस प्रकार की बातें करते हैं परन्तु यह सब बातें अस्थाई होती हैं।) आप फरमाते हैं कि "इंसान उम्र का इच्छुक हो कर नफस के धोखे में फंसता चला जाता है दुनिया में उम्रें देखते हैं कि साठ के बाद को शक्तियां क्षीण होने लगती हैं बड़ा ही सौभाग्य शाली है वह आदमी जो 80 या 82 साल की उम्र पाए और शक्तियां भी किसी सीमा तक अच्छी रहें। वरना अधिकतर आधे पागल से हो जाते हैं इसे न तो फिर मशवरों में शामिल करते हैं।" (अर्थात दूसरे लोग इस से मश्वरा नहीं लेते) "और न इस में अक्ल और दिमाग़ा की कोई रौशनी बाती रहती है कई बार ऐसी उम्री के बूढ़ों पर औरतें भी ज़ुल्म करती हैं कि कभी कभी रोटी देना भूल जाती हैं।"(घर वालों का भी कई बार घर वालों से अच्छा व्यवहार नहीं होता) आप फरमाते हैं कि "मुश्किल यह है कि इंसान जवानी में मस्त रहता है और मरना याद नहीं रहता।"(इस तरह जो सामर्थय वाले आदमी होते हैं वो समझते हैं कि यह अवस्था हमेशा बनी रहती है।) आप फरमाते हैं "बुरे बुरे काम धारण करते हैं और अन्त में जब समझता है तो फिर कुछ कर ही नहीं सकता। अत: इस जवानी की आयु को ग़नीमत समझो।" आप ने वहां मज्लिस में हिन्दु दोस्त शर्मपत को समझाते हुए फरमाया कि "जितने इरादे आप ने अपनी आयु में किए हैं उन में से कुछ पूरे हुए होंगे परन्तु अब सोच कर देखो कि वह एक बुलबुले की तरह थे जो शीघ्र फूट जाते हैं। और हाथ में कुछ नहीं पड़ता। पिछले आराम से कोई लाभ नह। उस को सोचने से दुख बढ़ता है।"(जब इंसान पिछले आराम से गुज़र जाता है और फिर कष्टों में आ जाता है तो फरमाया कि उस को लाभ कोई नहीं होता इंसान उस को सोचता है तो उस से दुख बढ़ जाता है) फरमाया कि "इस से अक्लमन्द के लिए यह बात निर्भर है कि इंसान इब्नुल वक्त हो।"(उस समय के अनुसार चले, पहचाने।) "रही ज़िन्दगी जो इंसान के पास है जो गुज़र गया वह वक्त मर गया उस की धारणा लाभ रहित है. देखो जब मां की गोद में होता है तो उस समय कैसा ख़ुश होता है। सब उठाए हुए फिरते है। वह ज़माना ऐसा होता है कि मानो जन्नत है और अब याद कर के देखो कि वह ज़माना कहां है।?"(वह भी गुज़र गया दुनिया की सारी चीज़ें अस्थायी है। सुविधाएं भी अस्थायी है। इसी लिए किसी को जब सुविधाएं मिलें अधिकार मिले हुकूमतें तो इन चीज़ों को समाने रखना चाहिए।) आप ने फरमाया कि "यह ज़माने फिर कहां मिल सकते हैं?" आप एक घटना का वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि एक बादशाह चला जा रहा था कुछ छोटे लड़कों के देख कर रो पड़ा कि जब से इस संगत को छोड़ा दुख पाया।" (रो इसलिए पड़ा कि छोटे बच्चे खेल रहे हैं और प्रत्येक चिन्ता से आज़ाद हैं इस को अपना वही बचपन याद आ गया कि क्या ज़माना था और अब ऐसा ज़माना है। तो बादशाहों के भी बावजूद आराम के शान्ति और चैन नहीं मिलता। आप फरमाते है कि केवल यह है कि अनुभव होना चाहिए।) आप फरमाते हैं बुढ़ापे का ज़माना बुरा होता है। उस समय प्रिय भा चाहते हैं कि मर जाए और मरने से पहले शक्तियां मर जाती हैं ।( कुछ प्रियों के दिल इतने कठोर होते हैं कि कि वो मरीज़ की हालत देख कर या बुढ़ापे को देख कर कहते हैं कि इस ने हमारे पर क्या बोझ डाला हुआ है आप फरमाते हैं ज़िन्दगी के बारे फरमाते हैं कि) दांत गिर जाते हैं आंखें रह जाती हैं और चाहे कुछ भी हो पत्थर का पुतला रह जाता है शक्ल तक बिगड़ जाती है और कुछ ऐसी बीमारियों में पीड़ित हो जाते हैं कि अन्त में ख़ुदकुशी कर लेते हैं।" (और यह भी हम ज़माने में देखतें हैं कि दुनिया में इस प्रकार हो रहा है तो इंसान की तो कोई हैसियत नहीं है परन्तु फिर भी जब इस को ताकत मिल रही होती है तो जो जवानी का होती है, जब दौलत प्राप्त करने का समय हो रहा होता है, ताकत होती है उस समय वह भूल जाता है कि भविष्य में मेरे साथ क्या होने वाला है।) आप फरमाते हैं कि कई बार जिन दुख़ों से भागना चाहता है एक बार ही उन में पीड़त हो जाता है और अगर औलाद ठीक न हो तो और अधिक दु:ख उठात है उस समय कहता है कि भूल हुई और इसी प्रकार गुज़ार दी ।( उस समय याद आता है कि अल्लाह तआला के आदेशों पर चलना ही बेहतर था और उस के अनुसार जीवन गुज़ारना चाहिए था बजाय इस के दुनिया में पड़ कर इंसान अल्लाह तआला को भूल जाए। अत: बहुत से फिरऔन भी गुज़रे हामान भी गुज़रे बड़े बड़े ताकत वर लोग आए जिन की ज़िनदिगयों पर इंसान अगर ध्यान भी दे तो इन से पता चलता है कि इन को उन का संसारिक सामर्थ्य कोई लाभ नही दे सका। आज की जो हुकूमतें हैं वे सामर्थ्य की दृष्टि से इन से अधिक ताकतवर हुकूमतें थीं। परन्तु सब समाप्त हो गईं। आप फरमाते हैं अक्ल मंद वही हो जो ख़ुदा की तरफ ध्यान दे। ख़ुदा की एस समझे इस के साथ कोई नहीं। हम ने आज़मा कर देखा है न कोई दैवी न देवता कोई काम आता हैं। अगर यह ख़ुदा की तरफ नहीं झुकता तो कोई इस पर रहम नहीं करता। अगर कोई आफत आ जाए तो कोई नहीं पूछता। इंसान पर हज़ारों बलाएं आती हैं अत: याद रखो के एक परवरदिगार के अतिरिक्त कोई नहीं। वही है जो मां के दिल में मुहब्बत डालता है। अगर इस के दिल को इस प्रकार न पैदा करता तो वह भी पालन न करती। इसलिए इस के साथ किसी को शरीक न करे। यह आप ने इस हिन्दु को नसीहत फरमाई।

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 3 422 से425 प्रकाशन 1985 ई यू के)

देवी देवता ज़ाहरी शक्ल में भी कुछ धर्मों में लोग बनाते हैं। और ये जो सांसारिक चाज़ें हैं, माल है, औलाद है, ताकत है, हुकूमत है। यह भी इंसान अल्लाह तआला के शरीक बना कर इंसान खड़ा कर लेता है और फिर दोस्तियां हैं या जैसा मैंने उदाहरण दिया है कुछ देश बड़े देशों की पनाह में आना चाहते हैं। उन को ख़ुदा बना लेते हैं ये सब चीज़ें समाप्त होने वाली हैं। और फिर जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया कि जहन्नम ऐसों का ठिकाना होती है। फिर एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

यह ख़ूब याद रखो कि जो आदमी अल्लाह तआला के लिए हो जाओ ख़ुदा तआला उस का हो जाता है और ख़ुदा किसी का धोखा नहीं देता। अगर कोई यह चाहे कि धोखा और फरेब से ख़ुदा तआला को ठग लूंगा तो यह बेफकूफी और अज्ञानता है। और ख़ुद ही धोखा खा रहा है। दुनिया का मोह, दुनिया की मुहब्बत सारी बुराइयों की जड़ है। इस में अन्धा हो कर इंसान इंसानियत के निकल जाता है और नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूं और मुझे क्या करना चाहिए। जिस अवस्था में अक्लमन्द इंसान किसी के धोखा में नहीं आ सकता तो अल्लाह तआला किसी के धोखे में कैसे आ सकता है। परन्तु ऐसे बुरे कामों की जड़ दुनिया की मुहब्बत है और सब से बड़ा गुनाह जिस ने इस समय मुसलमानों को तबाह कर रखा है और जिस में वो लिप्त हैं वह यही दुनिया की मुहब्बत है सोते हुए, जागते हुए, उठते बैठते हुए, लोग इसी दु:ख में फंसे हुए हैं जीते हैं।"(केवल दुनिया का दु:ख रह गया है) "और फिर इस समय का लिहाज़ और ख़्याल भी नहीं कि जब कब्र में रखे जाएंगे। ऐसे लोग अल्लाह तआला से डरते और धर्म के लिए थोड़ा भी चिन्ता करते तो लाभ होता।

( अहमदी और ग़ैर अहमदी में क्या अन्तर है? रूहानी ख़जायन जिल्द 20 पृष्ठ 483 प्रकाशन 2009 ई यू. के)

अत: एक मोमिन का काम है कि दुनिया की फिक्रों में पड़ने के स्थान पर अपनी आख़रत को संवारे और ख़ुदा तआला की मुहब्बत प्राप्त करने का कोशिश करे उस में संतोष पैदा हो दुनियावी सामानों को अल्लाह तआला की नेअमतें समझते हुए प्रयोग करे उन्हें अपना माबूद( उपास्य) न बनाए या उन्हीं के पीछे न दौड़ता फिरे। माबूद वही है जो हमारा वास्तविक माबूद है। मुहब्बत सब से अधिक एस मोमिन को अल्लाह तआला से करनी चाहिए। अल्लाह तआला से ही मुहब्बत एक इंसान में

तक्वा पैदा करती है और संतोष भी पैदा करती है। अल्लाह तआला ने मोमिन की यही निशानी बताई है कि वह अल्लाह तआला से सब से अधिक मुहब्बत करता है अत: अल्लाह तआला फरमाता है وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ (अल्बकरह:166) और जो लोग मोमिन हैं वो सब से अधिक अल्लाह तआला से मुहब्बत करते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला से मुहब्बत के बारे में कहते हुए फरमाते हैं कि

" जानना चाहिए कि अल्लाह तआला की ग़ैरत (सम्मान) किसी मोमिन की इस के ग़ैर में शरीक करन को नहीं चाहती।"(अल्लाह तआला को इस बात की बड़ा ग़ैरत है कि व्यक्तिगत मुहब्बत में कोई शरीक नहीं होना चाहिए।) फरमाया "ईमान जो हमें सब से अधिक प्यारा है वही इसी बात से सुरक्षित रह सकता है कि हम मुहब्बत में दूसरे को शरीक न करें। अल्लाह तआला ने मोमिन की यह निशानी बताई है कि وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ अर्थात जो मोमिन हैं वे अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी ओर से दिल नहीं लगाते। मुहब्बत एक विशेष अल्लाह ताला का हक है। जो आदमी इस का हक दूसरों को देगा वह तबाह होगा। सारी बरकतें तो ख़ुदा के बन्दों को मिलती हैं और सारी कुबूलियतें जो उन को प्राप्त होती हैं क्या वह कोई साधारण वज़ीफों से या मामूली नमाज़ रोज़ों से मिलती है? बल्कि वह मुहब्बत की तौहीद से मिलती हैं।" अल्लाह तआला की मुहब्बत में फना होने से मिलती हैं। जो उसी को हो जाते हैं उसी के हो रहते हैं। अपने हाथ से दूसरों को उस की राह में कुरबान करते हैं। फरमाया कि "मैं ख़ूब इस दर्द की हकीकत को समझता हूं जो ऐसे आदमी को होता है कि अचानक वह ऐसे आदमी से जुदा हो जाता है जिसको वह अपने दिल की मानो जान मानता है। परन्तु मुझे ग़ैरत इस बात की है कि हमारे वास्तविक प्यारे के मुकाबला पर कोई और न होना चाहिए। हमेशा से मेरा दिल यह फत्वा देता है कि ग़ैर से स्थायी मुहब्बत करना जिस से इलाही मुहब्बत बाहर हो चाहे वह बेटा हो या दोस्त, का हो एक प्रकार का कुफ्र और बड़ा गुनाह है। जिस से अगर नेअमत इलाही और अल्लाह तआला की रहमत क्षमा न न करे तो इमान के नष्ट हो जाने का ख़तरा है।

(अल्हक्म 10 अगस्त 1901 ई पृष्ठ 9 नम्बर 29 जिल्द 5, तफसीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सूरत अल्बकरह: आयत 166)

यह तो अल्लाह तआला की रहमत है। इस की नेअमत है कि वह ऐसे अवसर पैदा कर देती है नहीं तो फिर ईमान नष्ट हो जाता है।

अत: एक वास्तविक मोमिन सोच भी नहीं कर सकता। दुनिया के सामानों की मुहब्बत शहवत बन कर उन के सामने आ जाएगी। इस लिए तक्वा में तरक्की करना और संतोष पैदा करना एक मोमिन के लिए बहुत ज़रूरी है। इसलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि "मुत्तकी बनो सब से बड़े आबिद बन जाओगे।" ख़ुदा तआला की मुहब्बत और तक्वा दिल में पैदा होगी तो फिर अल्लाह तआला की अबूदियत और इबादत का हक भी इंसान अदा कर सकता है। और एक हकीकी आबिद का काम यह है कि इस में संतोष भी हो। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि अगर इस में संतोष पैदा करोगे तो शुक्र गुज़ार भी बनोगे।(सुनन इब्न माजा किताबुज़ुज़हद हदीस 4217) और सब से बढ़ कर एक मोमिन अल्लाह तआला का शुक्र करने वाला होता है और होना चाहिए। जो लोग मुंह से तो बेशक यह कहें कि हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने वाले हैं परन्तु दुनिया के सामानों और दुनिया के पीछे दौड़ने वाले वास्तव में शहवात की मुहब्बत में पीड़ित हैं वे कभी वास्तविक शुक्र करने वाले नहीं हो सकते। ऐसे दुनियादारों का एक अवसर पर नक्शा खींचते हुए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि आदम के बेटे के पास सोने की एक वादी भी हो तब भी वह चाहता है कि उस के पास सोने की दूसरी वादी भी आ जाए। फरमाया कि इस के मुंह का सिवाय मिट्टी के कोई चीज़ नहीं भर सकती। कब्र में जाएगी तभी इस की लालच समाप्त होगी। और फिर आप ने फरमाया कि अल्लाह तआला तौब: स्वीकार करने वालों की तौब: स्वीकार करता है।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल रिकाक हदीस 6438)

अत: ज़िन्दगियों में समय होता है। इंसान को चाहिए कि अगर कोई ग़लती हो भी तो तौब: करे।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक मोमिन के संतोष का स्तर वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि जिस आदमी ने दिल के संतोष और शारीरिक सेहत के साथ सुबह की और उस के पास एक दिन की ख़ुराक है। उस ने मानो सारी दुनिया जीत ली और उस की सारी नेअमतें उसे मिल गई।

( सुनन अत्तरिमज़ी अब्वाबुज़्ज़ुहद हदीस 2346)

अत: एक मोमिन के लिए यह संतोष का स्तर है। अल्लाह तआला हम में यह संतोष पैदा करे। दुनिया की चीज़ों की मुहब्बत के स्थान पर ख़ुदा तआला की मुहब्बत की प्राप्ति हमारा उद्देश्य हो अल्लाह तआला की मग़फिरत और रिज़वान हम प्राप्त करने वाले हों।

इस के बाद मैं इस दुआ की तरफ भी ध्यान दिलाना चाहता हूं जैसा कि मैंने पहले संक्षेप में वर्णन किया था कि मुसलमान देशों के लीडर जो संसारिक इच्छाओं के पीछे पड़े हुए हैं। और जिन्होंने व्यवहार में अल्लाह तआला के स्थान पर बड़ी ताकतों को आपना ख़ुदा बनाया हुआ है और समझते हैं कि उन से दोस्ती हमारी बका और तरक्की की गारन्टी बन सकती है हालांकि अमरीका के बारे में ही ले लें। इन का यह हाल है कि जर्मनी के अख़बार में एक समीक्षक ने एक लेख पिछने दिनों लिखा। इस ने लिखा के अन्य बातों के अतिरिक्त एक दूसरी बात यह भी है कि दुनिया जो वाशिंगटन को अपना माडल समझती थी, समझती है या उस की तरफ ध्यान किया हुआ है या अपने लिए समझते हैं कि यह हमारे लिए एक ऐसा माडल है जिस के पीछे हमें चलना चाहिए। शायद अब इस की वह स्थित न रहे। लिखता है कि इस के स्थान पर अब बीजिंग दो चीन की राजधानी है वह माडल बन रही है। अमरीका अपनी साख खो चुका है और अपना स्थान खो चुका है। अत: दुनियावी सहारे तो अस्थायी सहारे हैं आज आए कल चले गए। मुसलमानों को अब इस से समझना चाहिए। यह जो यरूशूलम में राजदूत हस्तांतरित करने का एलान हुआ है वह भी इस लिए अमरीका ने किया है कि इस प्रकार शायद इस्राईल से सम्बन्ध ठीक हो जाएं और अधिक बेहतर हो जाएं और उस की साख कम हो सके। लेकिन जब अल्लाह तआला की तरफ से गिरावट आती है, तो फिर सांसारिक दोस्ती और संधियां काम नहीं करतीं। ऐसा लगता है कि अब ये बड़ी शक्तियों पर, और विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में काम शुरू हो चुका है, और परिणाम कब आता है, यह अल्लाह तआला सबसे अच्छी तरह जानता है। लेकिन मुसलमानों को एक साथ लड़ाने का प्रयास अब इन स्थितियों में और अधिक तेज़ हो जाएगा, इसलिए मुसलमान दुनिया के लिए दुआ करनी चाहिए कि ख़ुदा उन्हें अक्ल दे। अह यह एक हो जाएं और देशों देशों के मध्य जो जंग की सम्भावना है और मुसलमान देशों के अन्दर जो आपस में लड़ाइयां हो रही हैं और हज़ारों बल्कि कई के अनुसार लाखों जानें नष्ट हो गईं ये भी दूर हो जांए। अल्लाह तआला उन को अक्ल दे और यह एक क़ौम बन कर रहने वाले हों। आपस की लड़ाइयों को समाप्त करें ताकि इस्लाम के दुश्मन अपना लाभ प्राप्त न कर सकें। और सब से बढ़ कर हमें दुआ करनी चाहिए कि मुसलमान अल्लाह तआला के भेजे हुए मसीह मौऊद और महदी को पहचानें जिस के साथ जुड़ कर आपस में भी और दुनिया में भी अमन स्थापित करने वाले बन सकता हैं।

☆ ☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

**पृष्ठ 6 का शेष**

में तेरी सहायता करेगा।) फरमाया" जिस तरह नबियों और रसूलों को परखा गया मुझे परख लो मैं दावा से कहता हूं कि इस स्तर पर मुझे परख लो और मुझे सच्चा पाओगे।"( आर हम देखते हैं कि अल्लाह तआला ने असंख्य मैदानों में आप की मदद फरमाई।) फरमाया कि" यह बातें मैंने संक्षेप में कही हैं। इन पर विचार करो और अल्लाह तआला से दुआएं करो। वह सामर्थयवान है कोई मार्ग अवश्य खोल देगा। उसका समर्थन और नुसरत सादिक को ही मिलती है।"

(मल्फूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 38 से 41, संस्करण 1985 मुद्रित यू. के)

आप की मज्लिस में मौलवियों का उल्लेख हो रहा था तो एक साहिब ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर अब तो मौलवी लोगों ने वे ख़ुत्बे पढ़ना छोड़ दिए हैं, जिन से मसीह की मृत्यु साबित होती थी। आपने फ़रमाया "अब तो वह नाम भी न लेंगे और अगर कोई ज़िक्र करे तो कहेंगे कि मसीह और महदी उल्लेख ही छोड़ और। "

(मल्फूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 286, संस्करण 1985 मुद्रित यू. के)

बहरहाल इन मौलवियों का तो यह हाल है कि अपने हितों के लिए वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का विरोध करते हैं और न केवल ख़ुद करते हैं बल्कि आप की तरफ और जमाअत अहमदिया के विश्वासों की तरफ झूठी और ग़लत बातें संबधित करते हैं और साधारण मुसलमानों के दिलों मैं जमाअत के ख़िलाफ घृणा उत्पन्न कर रहे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम सच्चाई मालूम करने का तरीका वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि अगर सच्चाई मालूम करनी है तो" फिर ख़ुदा तआला से अपनी नमाज़ों में दुआओएं मांगें कि उन पर सच्चाई को खोल दो और"( आप फरमाते हैं कि" मैं विश्वास रखता हूं कि अगर इंसान द्वैष और ज़िद से पवित्र हो कर हक को प्रकट करने के लिए ख़ुदा तआला की तरफ ध्यान करे तो चालीस दिन न गुज़रें होंगे कि उस पर सच्चाई खुल जाएगी।"( चालीस दिन पूरे नहीं होंगे कि उस पर सच्चाई खुल जाएगी अगर खाली दिमाग़ हो कर और हक मांगने ले लिए अल्लाह तआला से मांगो) फरमाया" परन्तु बहुत ही कम लोग हैं जो इन शर्तों के साथ ख़ुदा तआला से फैसला चाहते हैं और इस तरह पर अपनी कम अक्ली और हसद और द्वैष के कारण ख़ुदा के वली का इंकार कर के ईमान नष्ट करवा लेते हैं।" फरमाया" क्योंकि जब वली पर ईमान न रहे तो वली जो नबुव्वत के लिए बतौर कील की तरह होता है फिर नबुव्वत से इंकार करना पड़ता है और नबी के इंकार से ख़ुदा का इंकार होता है और इस तरह पर बिल्कुल ईमान नष्ट हो जाता है।

(मल्फूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 16, संस्करण 1985 मुद्रित यू. के)

अल्लाह तआला मुसलमानों को बुद्धि प्रदान करे कि वे केवल मौलवियों का बातों में न आएं बल्कि अपनी अक्ल इस्तेमाल करें और ख़ालिस हो कर अल्लाह तआला से मदद मांगें। अल्लाह तआला इन के दिल खोले और यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को मान कर इस हालत से बाहर निकले जिस एक अजीब हालत में आजकल की मुसलमान दुनिया फंसी हुई है। कोई रास्ती इन को फरार का नज़र नहीं आ रहा। पाकिस्तान में भी नए नए संगठन बन रहे हैं अब नया संगठन लब्बैक या रसूलुल्लाह बना है। जिन्होंने मार्च कर के पहले लाहौर का घेराव किया। फिर इस्लामाबाद का घेराव किया। इस के बाद इसी नाम की एक ओर संगठन है जो घेराव कर रहा है और कोऊ हुकूमत और कोई फौज और कोई कानून उन को रोक नहीं सकता। लब्बैक या रसूलुल्लाह कहने वाले वास्तव में, हम अहमदी हैं जिन्होंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात को सुना कि जब मेरा मसीह और महदी आए तो उसे मानना, उसे सलाम कहना, यह है लब्बैक कहने का सही तरीका। काश के ये लोग भी इस को समझ जाएं और बजाय खोखले नारों के लब्बैक या रसूलुल्लाह की वास्तविकता को समझें।

अल्लाह तआला दुनिया को भी, पाकिस्तान को भी प्रत्येक मुस्लिम देश को भी उपद्रव और फसाद से बचाए और अल्लाह तआला मुसलमानों पर विशेष दया करे, क्योंकि आज कल जो हालात हो रहे हैं और मुस्लिम दुनिया के ख़िलाफ जो योजना बनाई जा रही है, यह बहुत भयानक है। अगर उन्होंने अभी भी न समझा, तो फिर बाद में ये पछताएंगे। अल्लाह तआला रहम करे।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

**पृष्ठ 1 का शेष**

अंजाम बता दिया है कि अन्तत: वे शत्रु निराशा और घाटे में रहेंगे तथा उनमें से बहुत से यूसुफ़ के भाइयों की भांति वापस लौटेंगे। उस समय ख़ुदा इस विनीत (मुझे) को यूसुफ़ के समान सम्मान का ताज पहनाएगा तथा वह प्रतिष्ठा और प्रताप प्रदान करेगा जिसकी किसी को आशा न थी। अत: इस भविष्यवाणी का अधिकांश भाग पूर्ण हो चुका है क्योंकि ऐसे शत्रु पैदा हो गए जो मेरा समूल विनाश चाहते हैं। वास्तव में ये लोग अपने बुरे इरादों में यूसुफ़ के भाइयों से भी अधम हैं। इसलिए ख़ुदा ने कई लाख लोग मेरे अधीन करके और मुझे एक विशेष सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान करके उन्हें अपमानित किया और वह समय आता है कि ख़ुदा तआला इस से बढ़कर मेरी प्रतिष्ठा प्रकट करेगा तथा महा विरोधियों में से जो सदाचारी हैं उन्हें कहना पड़ेगा -رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا اِنَّا كُنَّا خَاطِئِيْنَ और कहना पड़ेगा कि

**110. एक सौ दस वां निशान** - बराहीन अहमदिया की यह भविष्यवाणी -

اِنَّا اَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ-

(देखिए बराहीन अहमदिया पृष्ठ 556)

अनुवाद - हम एक बहुत बड़ी जमाअत तुझे प्रदान करेंगे। प्रथम - एक पहला गिरोह जो आपदाओं के आने से पूर्व ईमान लाऍंगे। द्वितीय - दूसरा गिरोह जो ख़ुदा के प्रकोपी निशानों के पश्चात् ईमान लाऍंगे। हम बारम्बार लिख चुके हैं कि बराहीन अहमदिया में जितनी भविष्यवाणियाँ हैं उन पर पच्चीस वर्ष हो गए हैं तथा उस समय की भविष्यवाणियाँ हैं जब कि मेरे साथ एक व्यक्ति भी न था। यदि यह बात ग़लत है तो जैसे मेरा सारा दावा असत्य है। अत: स्पष्ट होना चाहिए कि यह भविष्यवाणी भी बराहीन अहमदिया में लिखित है जो उस एकान्तवास और निराश्रयता के समय में एक ऐसे युग की सूचना देती है जबकि हज़ारों लोग मेरी बैअत में सम्मिलित हो जाएंगे। अत: इस युग में यह भविष्यवाणी पूरी हुई। ग़ैब की सूचना देना ख़ुदा के अतिरिक्त किसी के अधिकार में नहीं। ग़ैब का विशेष ज्ञान ख़ुदा को है किन्तु अब तो हमारे विरोधियों की दृष्टि में ग़ैब का ज्ञान भी ख़ुदा विशेषता नहीं। देखते हैं कि कहां तक उन्नति करेंगे।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 269 रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 261)

☆ ☆ ☆

☆ ☆


## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

## ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

# सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अगस्त 2017 ई. (भाग -6)

**मैं एक ऐसे ख़ुदा तआला में विश्वास रखता हूँ जो इस ब्रह्मांड का निर्माता है, जो मेरी दुआओं को सुनता है और मैंने इस ख़ुदा तआला तो अपनी दुआओं को स्वीकृति के रूप में माना है। मैंने इस को देखा है।**

**हम हमेशा राष्ट्रीय कानून का पालन करने की कोशिश करते हैं और जितना संभव हो उतना इस समाज में सहयोग की कोशिश करते हैं।**

**जमाअत अहमदिया की ख़िलाफत शांति, प्रेम, मुहब्बत और सद्भाव का संदेश फैला रही है और 109 साल बाद आज भी ज़िंदा है और जमाअत अहमदिया की संख्या बढ़ती चली जा रही है।**

**जर्मनी के मशहूर अख़बार (SZ) Suddeutsche Zeitung के पत्रकार से इन्ट्रविय़ू, मेहमानों की ख़िताब को सुन कर प्रतिक्रियाएं**

**(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)**

**(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)**

**26 अगस्त 2017 (दिनांक रविवार शेष.....)**

**जर्मन मीडिया के सामने अनवर का इन्ट्रविय़ू**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बैनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 4:00 बजे अपराह्न समाप्त हुआ। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे जहां कार्यक्रम के अनुसार जर्मनी के मशहूर अख़बार (SZ) Suddeutsche Zeitung के पत्रकार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ का इन्ट्रविय़ू लिया।

*** पत्रकारों ने पहला सवाल किया की कि आप अल्लाह तआला में विश्वास करते हैं। इसका क्या मतलब है?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: बेशक मैं ख़ुदा तआला पर विश्वास रखता हूँ और इसका मतलब है कि मैं एक ऐसे ख़ुदा तआला में विश्वास रखता हूँ जो इस ब्रह्मांड का निर्माता है, जो मेरी दुआओं को सुनता है और मैंने उस ख़ुदा तआला को अपनी दुआओं को स्वीकृति के रूप में माना है। मैंने इस को देखा है। शारीरिक रूप से तो नहीं, लेकिन मुझे दुआ की स्वीकृति के द्वारा अपने ख़ुदा तआला को पहचाना है।

*** उसी पत्रकार ने सवाल किया कि आप जिस ख़ुदा तआला पर विश्वास रखते हैं उस में और दूसरों के ख़ुदा में कोई अंतर है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "ख़ुदा तआला तो सिर्फ एक ही है जो सारी दुनिया का रब्ब है। ख़ुदा तआला तो एक ही है जो अलग-अलग क़ौमों में नबी भेजता है और हमें विश्वास है कि प्रत्येक क़ौम में नबी आया है जो ख़ुदा तआला की तरफ से भेजा गया है। ये नबी अपने समय पर आए और मानवता की भलाई के लिए आए।

*** तब, पत्रकार ने सवाल उठाया कि जब "खलीफा" का शब्द आता है, तो लोगों के दिमाग़ों में या तो पुराना ज़माना आ जाता है या दाइश मन में आता है। इस बारे में आप क्या सोचते हैं?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: ख़लीफा अरबी भाषा का शब्द है जिसका मतलब उत्तराधिकारी है और ख़िलाफ उत्तराधिकारी को कहते हैं। और इस शब्द का प्रयोग इस्लाम में भी किया जाता है, दूसरे शब्दों में, मैं कहूंगा कि कैथोलिक पोप भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ख़लीफा कहलाता है।

*** पत्रकार ने पूछा आप ख़िलफात से क्या प्राप्त करना चाहते हैं?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अहमदिया जमाअत के संस्थापक ने फरमाया है कि मैं दो लक्ष्यों को लाया। एक तो यह कि मानव जाति में अल्लाह तआला के अधिकारों का एहसास दिलाना और दूसरा अल्लाह का बन्दों के अधिकारों का अदा कराना चूंकि ख़लीफा मसीह और महदी मौऊद का उत्तराधिकारी है, इसलिए ख़लीफा का भी यही काम है और उस ने इसी उद्देश्य को प्राप्त करना है।

* फिर पत्रकार ने कहा कि जर्मनी के चुनाव के लिए केवल कुछ सप्ताह बचे हैं और वर्तमान समय में, रिफयूजी, धर्म, इस्लाम और माइग्रेशन मुख्य मुद्दे हैं। बहुत से अहमदी भी यहां जर्मनी में रिफयूजी के रूप में हैं और इस समय बहुत अच्छी तरह से एकीकृत हो गए हैं। आप जर्मन राजनेताओं को क्या नसीहत करना चाहेंगे?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: बेशक मैं ख़ुदा तआला पर विश्वास रखता हूँ और इसका मतलब है कि मैं एक ऐसे ख़ुदा तआला में विश्वास रखता हूँ जो इस ब्रह्मांड का निर्माता है, जो मेरी दुआओं को सुनता है और मैंने उस ख़ुदा तआला को अपनी दुआओं को स्वीकृति के रूप में माना है। मैंने इस को देखा है। शारीरिक रूप से तो नहीं, लेकिन मुझे दुआ की स्वीकृति के द्वारा अपने ख़ुदा तआला को पहचाना है।

*** उसी पत्रकार ने सवाल किया कि आप जिस ख़ुदा तआला पर विश्वास रखते हैं उस में और दूसरों के ख़ुदा में कोई अंतर है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "ख़ुदा तआला तो सिर्फ एक ही है जो सारी दुनिया का रब्ब है। ख़ुदा तआला तो एक ही है जो अलग-अलग क़ौमों में नबी भेजता है और हमें विश्वास है कि प्रत्येक क़ौम में नबी आया है जो ख़ुदा तआला की तरफ से भेजा गया है। ये नबी अपने समय पर आए और मानवता की भलाई के लिए आए।

*** तब, पत्रकार ने सवाल उठाया कि जब "खलीफा" का शब्द आता है, तो लोगों के दिमाग़ों में या तो पुराना ज़माना आ जाता है या दाइश मन में आता है। इस बारे में आप क्या सोचते हैं?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: ख़लीफा अरबी भाषा का शब्द है जिसका मतलब उत्तराधिकारी है और ख़िलाफ उत्तराधिकारी को कहते हैं। और इस शब्द का प्रयोग इस्लाम में भी किया जाता है, दूसरे शब्दों में, मैं कहूंगा कि कैथोलिक पोप भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ख़लीफा कहलाता है।

*** पत्रकार ने पूछा आप ख़िलफात से क्या प्राप्त करना चाहते हैं?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अहमदिया जमाअत के संस्थापक ने फरमाया है कि मैं दो लक्ष्यों को लाया। एक तो यह कि मानव जाति में अल्लाह तआला के अधिकारों का एहसास दिलाना और दूसरा अल्लाह का बन्दों के अधिकारों का अदा कराना चूंकि ख़लीफा मसीह और महदी मौऊद का उत्तराधिकारी है, इसलिए ख़लीफा का भी यही काम है और उस ने इसी उद्देश्य को प्राप्त करना है।

* फिर पत्रकार ने कहा कि जर्मनी के चुनाव के लिए केवल कुछ सप्ताह बचे हैं और वर्तमान समय में, रिफयूजी, धर्म, इस्लाम और माइग्रेशन मुख्य मुद्दे हैं। बहुत से अहमदी भी यहां जर्मनी में रिफयूजी के रूप में हैं और इस समय बहुत अच्छी तरह से एकीकृत हो गए हैं। आप जर्मन राजनेताओं को क्या नसीहत करना चाहेंगे?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जर्मन सरकार और जर्मन लोग हमेशा खुले दिल वाले हैं इसलिए जर्मन सरकार एक बड़ी संख्या में शरणार्थियों को अपने देश के अंदर समायोजित करने की कोशिश कर रही है। यदि तो ये सब शरणार्थी चाहे वे अरब हों या पाकिस्तान के अहमदी हों,अपने वादा को निभा रहे हैं, अर्थात वे देश के कानून का पालन करने वाले हैं और इस क़ौम का हिस्सा बनने जा रहे हैं,तो फिर इन शरणार्थियों से किसी प्रकार का भय नहीं होना चाहिए लेकिन अगर कोई बुरे काम कर रहा हैं तो फिर सावधान रहने और होशियार रहने की ज़रूरत है जहां तक हम अहमदियों का सम्बंध है, हम हमेशा राष्ट्रीय कानून का पालन करने की कोशिश करते हैं और जितना संभव हो उतना इस समाज में सहयोग की कोशिश करते हैं।

*** पत्रकार ने कहा, "क्या आप उन शरणार्थियों को नसीहत करना चाहते हैं जो इस समय जर्मनी में आ रहे हैं?"**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यही नसीहत करूँगा जो मैं अपने अहमदियों को भी करता हूं कि उन्हें चाहिए कि वे कानून की पूरी पैरवी करने वाले हों, अपनी सारी क्षमताओं और योग्यताओं को देश की भलाई के लिए उपयोग में लाने वाले हों। उन लोगों का ध्यान रखने वाले हों जिन्होंने इन शरणार्थियों को अपने देश के अंदर रहने का अवसर दिया था। और इस देश और लोगों की जहां तक हो सके सहायता करने वाले हों। समाजिक सहायता लेने के स्थान पर महनत करें और देश को बनाने वालों में शामिल हो जाएं।

* पत्रकार ने कहा कि जर्मनी में भी यहूदी बसे हैं जब शरणार्थीयों का आना शुरू हुआ, तो बहुत बहस हुई थी कि यहूदियों को अच्छी तरह पता है कि शरणार्थी होने का क्या अर्थ है। दूसरी ओर, यह डर है कि बड़ी संख्या में मुसलमान देश में आ रहे हैं और मुसलमानों और यहूदियों के बीच तनाव का खतरा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "जो बुरा करने वाले हैं, उन से कानून को सख्ती से पेश आना चाहिए। सावधान रहने की कोई ज़रूरत नहीं है, लेकिन इन शर्णाथियों से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है।

* पत्रकार ने कहा कि यदि अहमदियों और अन्य मुसलमानों में भी तनाव है, तो क्या इस बारे में आप को कोई भय या ख़ौफतो नहीं है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि मुसलमान शरणार्थी देश के कानून का पालन करने वाले हैं तो मुझे कोई डर नहीं है और यह सरकार का कर्तव्य है वह कानून को लागू करवाए।

* इस पर पत्रकार ने कहा कि कानून का पालन करवाना कभी-कभी संभव नहीं है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसका मतलब यह नहीं है कि कुछ जर्मन लोगों में से भी तो हैं जो मुसलमानों बल्कि अहमदियों के भी ख़िलाफ हैं। हमारा काम तो तब्लीग़ का काम है इसलिए जब हम प्यार, मुहब्बत, शांति और सद्भाव का संदेश देते हैं तो लोगों को ख़ुद ही एहसास हो जाता है और वे समझ जाते क़ुरान करीम की शिक्षा यही है कि आप प्यार, प्रेम और सद्भाव के साथ रहते हैं और दूसरों के साथ प्यार से बात करें, आपके दुश्मन भी आपके करीबी दोस्त बन जाएंगे।

*** इस पर पत्रकार ने कहा कि यह तो एक सिद्धांत था। व्यावहारिक रूप से ऐसा नहीं होता है।**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह एक सिद्धांत नहीं है। हमें इस का अनुभव है। आप के लिए संभवत: यह सिद्धांत हो सकता है लेकिन मेरे लिए यह सिद्धांत नहीं है।

**पत्रकार ने कहा कि आपके जीवन को कोई खतरा नहीं है?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मेरा काम तब्लीग़ करना है। यदि मैं छोटी छोटी चीज़ों से डरने लग जाऊं, तो मैं तब्लीग़ का काम नहीं कर पाऊंगा। मैं ने तो तब्लीग़ करनी है चाहे मेरी जान को ही ख़तरा हो। पहले मैं पाकिस्तान में था। यहां मेरे जीवन को यू के की तुलना में अधिक जोखिम था क्योंकि देश का कानून भी बुरे लोगों की मदद करता है। वे जो चाहते हैं अहमिदयों के विरुद्ध कर सकते हैं।

*** पत्रकार ने सवाल उठाया कि जब लोग इस्लाम के बारे में बात करते हैं, तो वे कहते हैं कि इस्लाम की कोई एक किस्म नहीं है, बल्कि इस्लाम की कई किस्में हैं।**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "लोग जो चाहे कहते रहें, लेकिन सच्चाई यह है कि इस्लाम एक समान है। हाँ जिस तरह ईसाईयों के विभिन्न संप्रदाय हैं इसी तरह इस्लाम के अंदर भी कई समुदाय हैं लेकिन सभी समुदायों की एक ही पवित्र किताब है और सब का ईमान यही है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला के नबी हैं। अत: सभी फिर्के इस बात को मानते हैं कि एक ख़ुदा है और एक नबी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसमें कोई शक नहीं कि इस्लाम के अंदर विभिन्न संप्रदाय हैं लेकिन इसके बारे में भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी कि एक समय ऐसा आएगा जब इस्लाम के अंदर विभिन्न संप्रदाय होंगे और उस समय वह व्यक्ति होगा जो मसीह मौऊद और महदी मौऊद होगा। और यह व्यक्ति सारी मुसलमान उम्मत को बल्कि सारी दुनिया को एक हाथ के नीचे इकट्ठा करेगा, और इस्लाम के मूल संदेश का प्रसार करेगा। तो यह वह तब्लीग़ का कार्य है जो हम पिछले 125 वर्षों से कर रहे हैं।

इन्ट्रवियू के अंत में पत्रकार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ का धन्यवाद किया। यह इन्ट्रवियू 5 बजकर 5 मिनट तक जारी रहा।

उसके बाद Frankfurter allgemeine Zeitung (FAZ) की पत्रकार और रेडियो चैनल Duetschlandfunk के पत्रकार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ से इन्ट्रवियू लिया।

*** रेडियो चैनल प्रतिनिधि पत्रकार ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने अपने संबोधन में So called Muslims शब्द का इस्तेमाल किया था। इससे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का क्या मतलब था?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: So called Muslims (तथाकथित मुसलमानों) से मुराद वह मुसलमान हैं जो कुरआन की मूल शिक्षाओं का पालन नहीं कर रहे हैं और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत का पालन नहीं कर रहे। वे एक ओर मुस्लिम होने का दावा करते हैं, लेकिन वे वास्तविक मुस्लिम नहीं हैं यही कारण है कि मैंने कहा है कि वे एक तथा कथित मुस्लिम हैं वे ये सब कुछ इस्लाम के नाम पर कर रहे हैं और इस्लाम की शिक्षा तो शांति की शिक्षा है अत: वे लोग जो नफरत फैला रहे हैं और जुल्म ढा रहे हैं और अपने आप को मुसलमान कहते हैं उनके बारे में मैं तो यह कहूंगा कि वे वास्तविक मुसलमान नहीं बल्कि 'तथाकथित' मुसलमान हैं क्योंकि वे इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से अनजान हैं।

*** पत्रकार ने सवाल किया कि क्या ये तथाकथित मुसलमान इस्लाम के लिए ख़तरा हैं?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अज़ीज़ ने फरमाया: यह तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी कि अंतिम समय में मुसलमानों की हालत ऐसी हो जाएगी कि नाम के सिवा इस्लाम का कुछ शेष नहीं रहेगा और उस समय एक सुधारक आए जो इस्लाम के हुज़ूर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वास्तविक पालन करने वाला होगा और वह प्रतिरूप नबी होने का दावा करेगा उसे मसीह और महदी का उपनाम दिया जाएगा वह इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को फैलाएगा जो कि उस समय के उलमा और विद्वान भूल चुके होंगे। इसलिए हम मानते हैं कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के संस्थापक वही एक सुधारक हैं जिने के बारे में अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके आगमन के कुछ निशानों का वर्णन भी किया है जो पूरी हुई हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अत: हम तो अपना तब्लीग़ काम जारी रखे हुए हैं लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या है जिनके मन में ग़लत विचार थे और उन्होंने इस्लाम ठीक तरह से समझा नहीं था क्योंकि उलमा और विद्वानों ने उनका ग़लत मार्ग दर्शन किया था और उन तक जब हमारा संदेश पहुंचा (इनमें अरब भी और मुसलमान उम्मत की दूसरी क़ौमों के लोग भी शामिल हैं) तो उन्होंने हमारे संदेश को समझा और उनमें से कुछ ने हमसे बातचीत करके और चर्चा आदि करके अपने पुराने विचारों को त्याग दिया और इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को समझ कर अहमदियत में शामिल हो गए। हालांकि पर्याप्त लोग अपने विचारों पर कठोरता से स्थापित हैं, लेकिन लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या है जिन्होंने इस संदेश को समझा और स्वीकार किया है ।

उसके बाद अख़बार faz की महिला पत्रकार ने सवाल किया कि जैसा कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने अभी कहा कि कुछ आतंकवादी हैं जो इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का पालन नहीं करते जैसा कि आइ. ए.एस उनके अन्दर भी ख़िलाफत मौजूद है और उन के पास अपना क्षेत्र भी है आप भी ख़लीफा हैं, लेकिन आपका पास कोई देश नहीं है तो क्या आप की ख़िलाफत आइ.एस की ख़िलाफत के बदले है? और यह बताने के लिए है कि ख़िलाफत को किसी देश की जरूरत नहीं होती।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "एक चीज़ के लिए कोई न कोई नियम या तर्क होता है। ख़िलफात तो उत्तराधिकारी को कहा जाता है जैसा कि मैंने पहले भी बताया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक लंबी हदीस है जिसमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अंतिम समय में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक वास्तविक अनुयायी आएगा जो मसीह और महदी होने का दावा करेगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसके कुछ लक्षण भी बताए और मुसलमानों को फरमाया कि जब तुम उससे मिलो तो उसे मेरा सलाम पहुंचाना। इसी हदीस में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कुछ समय बाद सच्ची ख़िलाफत समाप्त हो जाएगी। आज हम देख सकते हैं कि एक हज़ार साल से अधिक का समय बीत चुका है, जिसमें वास्तविक ख़िलाफत नहीं आई। कुछ विशिष्ट अवधि में ख़िलाफत की स्थापना तो हुई लेकिन चल नहीं सकी। आखिरी ख़िलाफत तुर्की में थी और यह बीसवीं शताब्दी में समाप्त हो गई थी। तो यह बात भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस में वर्णित हुई है कि अंतिम समय में जब सुधारक आएगा तो उसके बाद ख़िलाफत की स्थापना होगा कि वास्तविक ख़िलाफत होगी। अत: हमारा विश्वास है कि वह व्यक्ति आ चुका है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ दुनियावी और कुछ आसामनी निशान वर्णन किए थे जो पूरे हो चुके हैं। यदि ये सारी बातें बयान करूँ तो काफी समय लग जाएगा संक्षेप में ख़िलाफत तभी शुरू होती है जब एक नबी आती है और जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के संस्थापक का स्थान भी नबी का है लेकिन वह प्रतिरूप नबी हैं उन के बाद भी ख़िलाफत की सिलसिला शुरू हुआ यही कारण है कि जमाअत अहमदिया की ख़िलफात वास्तविक ख़िलाफत है। पिछले एक सौ नौ साल से यह ख़िलाफत जारी है। और यह हमेशा जारी रहेगी क्योंकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसकी भी भविष्यवाणी फरमाई थी कि उस व्यक्ति के आने के बाद जो ख़िलाफत शुरू होगी उस की श्रृंखला क़यामत तक जारी रहेगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि आइ.एस की ख़िलाफत की ओर देखें तो उन्होंने अभी तक क्या प्राप्त किया है। उनके ख़लीफा का क्या बना? उसके बारे में कहा गया है कि वह कत्ल कर दिया गया है। जहां तक क्षेत्र का संबंध है, तो वह क्षेत्र भी अब तक उनके पास नहीं रहे है और यह फिर आइ एस का ख़लीफा जो कुछ कर रहा था छुपकर कर रहा था। वह कभी भी लोगों के सामने नहीं आया। इस्लाम में कोई भी ख़लीफा छुप कर नहीं बैठा, जैसे आइ एस का ख़लीफा बैठा हुआ था। कहते हैं कि वे केवल एक बार लोगों के सामने आया था और अब कहा जा रहा है कि वह मर चुका है। तो उनकी ख़िलाफत कहां गई। दूसरी ओर जमाअत अहमदिया की ख़िलाफत शांति, प्रेम, मुहब्बत और सद्भाव का संदेश फैला रही है और 109 साल बाद आज भी ज़िंदा है और जमाअत अहमदिया की संख्या बढ़ती चली जा रही है। आई.एस के ख़लीफा

को मानने वालों की संख्या पहले तीन या चार साल बढ़ी या शायद सिर्फ दो साल ही वृद्धि हुई है और इसके बाद उस के मानने वालों की संख्या बहुत ही कम हो गई। जब आई.एस.आई.शुरू हुआ, 2013 में स्वीडन में भी मुझ से पूछा गया था कि आपको इस ख़िलाफत से कोई डर नहीं है? मैंने उनें उत्तर दिया कि दाइश तो आतंकवादियों का एक समूह है जो स्वयं अपनी मौत मर जाएगा। अब आप देख सकते हैं कि आई.एस.आई.का क्या हुआ। यदि अमेरिका और अन्य पश्चिमी शक्तियां आई.एस. आई.को आपूर्ति प्रदान नहीं करती हैं, तो वह खुद मरेंगे। दूसरी ओर, हम तो पश्चिम से कुछ नहीं ले रहे हैं हम तो स्वंय त्याग करके अपनी प्रणाली को चला रहे हैं हमारे अन्दर कुरबानी की भावना है जो दूसरों में नहीं है। दाइश लोगों को अपने साथ रखने के महीने का तीन से चार हज़ार डॉलर तक दे रही है, और हम इस के विपरीत लोगों से पैसे ले रहे हैं। चाहे लोगों के पास अच्छी नौकरियां हों या साधारण नौकरी कर रहे हैं, वे सभी वित्तीय कुरबानी करते हैं वे पैसे की एक विशेष राशि देते हैं तो यह वास्तविक ख़िलाफत है।

*** तब पत्रकार ने कहा कि इस मीटिंग में आपने इस्लाम को एक बहुत ही आदरणीय संदेश दिया है। क्या आप इस मुलाकात के माध्यम से जर्मनी और बाकी दुनिया को कुछ सन्देश देना चाहेंगे?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "मैंने तो संदेश दे दिया है। क्या यही संदेश पर्याप्त नहीं है?

* फिर एक महिला पत्रकार ने पूछा कि आप ने जिस शान्ति वाले इस्लाम के बारे में बताया है वह इस्लाम की अन्य शाखाओं को कैसे प्रभावित कर सकता है।?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "हर साल लाखों लोग हमारी जमाअत में शामिल हो रहे हैं। उनमें से ज्यादातर मुसलमानों में से हमारी जमाअत में शामिल हो रहे हैं। जो मुसलमान हमारी जमाअत में शामिल होते हैं उन्हें इस बात का एहसास हो जाता है कि यही वास्तविक इस्लाम है जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेकर आए और जिस पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अमल किया और उसी इस्लाम ने हमेशा जीवित रहना है। चूंकि हमारी संख्या बढ़ती जा रही है, यह दर्शाती है कि यही इस्लाम हमेशा जीवित रहेगा। इंशा अल्लाह तआला।

इन्ट्रवियू 5 बज कर 20 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

**लिथुआनिया, अल्जीरिया और अरब देशों के मेहमानों और प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात**

आज, कार्यक्रम के अनुसार, लिथुआनिया, अल्जीरिया और अरब देशों के मेहमानों और प्रतिनिधिमंडल का मुलाकात का कार्यक्रम था। 8 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए और मुलाकातों का कार्यक्रम शुरू हुआ।

* सबसे पहले अल्जीरिया से आने वाले एक मेहमान ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की और विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। महोदय मुलाकात से इस कदर प्रभावित हुए कि अंत में जब महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई तो अपने प्यार और फदाईत को व्यक्त करते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ की पगड़ी को चूमा। महोदय ने अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए कहा मेरे आँसू कुछ समय के लिए सूख गए और आज मैं ज़ुहर के बाद मेरी भावनाओं को नियंत्रित नहीं कर पाया। मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मुझे अपने अर्थात अरबों की तरफ से सुस्ती का एहसास हो गया है, जबकि हमारी सुस्ती और लापरवाही के कारण हमारे उर्दू बोलने वाले भाई आगे बढ़ गए हैं और पश्चिमी देशों में इस्लाम का प्रसार करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। यह देख कर मेरे दिल में इस्लाम की महानता दृढ़ हो गई है। यह मुलाकात 8 बज कर 22 मिनट तक जारी रही।

* इस के बाद, लिथुआनिया के प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की। लिथुआनिया से एक 27 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल था, जिसमें 14 ग़ैर अहमदी और अन्य अहमदी दोस्त थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मेहमानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि "आप सब लोगों ने यहां जलसा देखा यहां जलसा में शामिल हो कर आप को इस्लाम के बारे में कोई भय लगा? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "जिस इस्लाम पर हम अनुकरण कर रहे हैं हम फैला रहे हैं यही सच्चा इस्लाम है। आप ने घरों में कुछ लोगों को नियंत्रित करना होता है, लेकिन इस के बावजूद भी घरों में भी विवाद हैं यहाँ तीस और चालीस हज़ार पुरुष, महिलाएं और बच्चे हैं, लेकिन कोई संघर्ष नहीं है। सभी प्यार, शांति और मुहब्बत के साथ काम कर रहे हैं यह इस्लाम की सच्ची शिक्षा है।

* एक मित्र ने कहा कि मैंने 2013 में नॉर्वे में रहने के दौरान बैअत का वादा किया था। वहां के मुब्बलिग़ साहिब से बात चीत होती रहती है। वह रूसी जानते थे। इन तब्लीग़ कार्यक्रमों के बाद, मैंने बैअत कर ली। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: "आपने ने अब इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को स्वीकार कर लिया है। अब आप शांति, प्रेम और सद्भाव के राजदूत हैं। अब आप को इस्लाम की इन शिक्षाओं को फैलाना चाहिए। एक सवाल के जवाब में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: "आप अपनी कमज़ोरियों और दोषों को दूसरों से तो छिपा सकते हैं, लेकिन आप अल्लाह तआला से छिपा नहीं सकते हैं। अंत में हर किसी ने ख़ुदा तआला के सामने हाज़िर होना है, इसलिए पूरी कोशिश करें कि ख़ुदा तआला के अधिकार को अदा करें और ख़ुदा तआला की सृष्टि के अधिकारों को भी अदा करें। ख़ुदा तआला के बन्दों के अधिकारों को भी अदा करें। हमेशा दूसरों का सम्मान करें और दूसरों के लिए अच्छा सोचें।

* इस प्रतिनिधिमंडल में शामिल भारत के एक मेहमान से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा: "जब आप भारत जाएं तो कादियान से भी हो कर आएं।

* एक मेहमान Augustinas Sulija अगस्तिनस सुलिजा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मुझे एसा लगा जैसे मैं अपने घर में था आपकी जमाअत दुनिया के विभिन्न हिस्सों से यहीं थोड़े समय के लिए एकत्रित हुई है और हर तरफ वक्फ की भावना दिखाई दे रही है मेरे जैसे अजनबियों के लिए आश्चर्यजनक है यह बिल्कुल एक नई दुनिया है मैं बहुत खुश हूं कि मुझे सभ्यता, धर्म, पहचान, भोजन, परंपरा और कई चीज़ों को देखने का अवसर मिला। आप लोगों का अहमदी होने के नाते प्रत्येक दिन एक महान उद्देश्य के लिए प्रतिस्पर्धा करना और फिर कोशिश करना प्रशंसा के योग्य है। मेरी इच्छा है कि यह परंपरा का रोज़ की आदत बन जाए। अत: आप के विचार और आप की भावनाएं बहुत ठीक हैं और इन में सार्वभौमिकता है।

* एक अन्य मेहमान Eimis Vengrauskas इमिस वेंग्रास्कस ने कहा कि इस जमाअत को इतने निकट से देखना मेरे लिए मेरे बहुत ख़ुशी की बात है क्योंकि इससे पहले मुझे मुस्लिमों के बारे में कुछ नहीं पता था। इस जलसा से मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका मिला है और अब मैं एक बेहतर व्यक्ति के रूप में रहूंगा। इस धर्म की शिक्षाएं एक अच्छे इंसान बनने में मेरी सहायक साबित होंगी। मुझे यहां बहुत अच्छी तरह से व्यवहार किया गया है। मुझे लगा जैसे मैं ही एक मेहमान था और हर कोई मेरे आराम का विचार कर रहा था। मुझे इस बात को बहुत सराहता हूं। मुझे समय के ख़लीफा से मिलने और उन से प्रशन करने का अवसर मिला है मैं शक्र की भावना से अभिभूत हूं कि इतनी अधिक भीड़ के बावजूद हमें मिलने का समय दिया गया था।

* एक मेहमान Tomas Rachmanovas टॉमस रचमोनोवास ने बताया कि मैं लिथवानिया से अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ जलसा में शामिल हुआ । मैंने इस जलसा को यूट्यूब पर देखा हुआ था लेकिन मैं ख़ुद यहां आकर जो कुछ भी अपनी आंखों से देखा उसे वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। यह जमाअत बहुत अच्छी है, प्यारी और शांतिपूर्ण है, और खुशी की बात यह है कि मैं ने इसे अपने परिवार के साथ देखा है जो आदमी भी इस जमाअत में शामिल हुआ है उस के लिए मेरी नेक इच्छाएं हैं। खुद थॉमस ने 2013 में बैअत की थी, जबकि उनकी पत्नी ने अपने दोनों बच्चों के साथ मिलकर अहमदित को स्वीकार करने का फैसला किया, और बैअत कर के अल्लाह तआला के फज़ल से जमाअत में शामिल हुईं। थॉमस साहिब की पत्नी ने कहा, "मैं जमाअत अहमदिया में शामिल हो कर अपने पति और बच्चों के साथ बेहतर जीवन की शुरूआत कर रही हूं।

* एक मेहमान मैकुलस कैंतिस ने कहा कि मुझे एक लिथवानियन दोस्त श्रीमान थॉमस द्वारा जमाअत का परिचय प्राप्त हुआ। मैं यहां जमाअत अहमदिया के ख़लीफा से मिलने के लिए आया हूं। मैं ईसाई धर्म से संबंधित रहा हूँ मैं अपने मुस्लिम भाई को कैसे भुला सकता हूं, क्योंकि हम सब एक ही ख़ुदा के मानने वाले हैं मैं वापस जाकर सर्व धर्म सम्मेलन आयोजित करने की कोशिश करूँगा जहां पादरियों को भी आमंत्रित करूंगा और आप को भी। हम एक-दूसरे को जानने की कोशिश करने के लिए विभिन्न धर्मों के लोगों से मिलेंगे यह लिथुआनिया के भविष्य के लिए इस

तरह के एक इंटरफेथ सम्मेलन के लिए बहुत उपयोगी है जहां मुसलमानों का भी प्रतिनिधित्व हो और आप के बारे में भी लोगों को पता चले। मैं यहाँ रहकर बहुत प्रभावित हुआ हूं और वापस जाकर अपने दोस्तों को भी शामिल करने के लिए तैय्यार करूंगा।

* एक मेहमान अंग्रेयदा सारा इपानते ने कहा: इस कार्यक्रम में मेरी पहली भागीदार है लेकिन इतने बड़े पैमाने पर लोगों में शामिल होना मेरे लिए आश्चर्यचकित है कई धर्म और सभ्यता के लोग यहां एकत्र हुए थे और ये सभी एक-दूसरे की मदद कर रहे थे। दूसरा इस कार्यक्रम का प्रबन्ध भी आश्चर्यजनक और प्रभावशाली थी। तकरीरें सुन कर और समय के ख़लीफा से मुलाकात के बाद, मेरा जमाअत के बार में जानने की इच्छा और अधिक बढ़ गई है। मैं निश्चित रूप से आप की किताबें पढ़ूंगी क्योंकि इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताबों से इस बात का अंदाज़ा हुआ है कि जो कहा गया है वह अक्ल के निकट है। मेरा अनुभव अच्छा है और मैं अगले साल के जलसा का इंतज़ार करूँगी। मेरे विचार में ब्रेक के दौरान भी, जो विभिन्न प्रदर्शनियां और कार्यक्रम आयोजित होते हैं इन में शामिल होने के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करके सुधार किया जा सकता है।

लिथोनिया के वफद से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात,8 बज कर 40 मिन्ट तक जारी रही। इस के बाद वफद के मैंम्बरों ने हूज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ एक तस्वीर लाने का सौभाग्य प्राप्त किया

* इस के बाद अरब देशों से आने वाले मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया। अरबों की मुलाकात का इंतज़ाम एक बड़े हॉल में किया गया था। अरब मर्द तथा पुरुषों की संख्या 275 थी, जिसमें 200 के लगभग ग़ैर अहमदी अरब मेहमान शामिल थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ग़ैर-अहमदी अरबों से पूछा कि क्या आप ने यहां जलसा में कोई एसी चीज़े देखी जो इस्लाम के विरूद्ध हो? अगर कोई ऐसा चीज़ देखी तो हमें भी बताएं ताकि हम उस का सुधार कर सकें।

* इस पर एक अरब मित्र ने कहा कि मैंने यहां कोई बात भी इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध नहीं देखा है। मैं एम.टी.ए भी देखता हूं। मैं तीन चार सालों से जमाअत के संपर्क में हूं। मैंने हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ का पत्र लिखा था। मुझे पत्र का उत्तर प्राप्त हुआ। अब मैं हुज़ूर अनवर की सेवा के लिए दुआ का निवेदन करना चाहता हूं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया : अहमदी होना या न होना प्रत्येक के दिल काम मामला है। जहां तक मुसलमानों का संबंध है, उन में एकता की आवश्यकता है, इसलिए मुसलमानों में प्रेम और मुहब्बत को बढ़ाना चाहिए।

* इस के बाद एक अन्य ग़ैर-अहमदी अरब दोस्त ने कहा कि जर्मनी में मेरा जमाअत अहमदिया के साथ परिचय हुआ है और मैंने अहमदियों को सच्चाई पर पाया है। हमें आज कल सच्चाई की ही ज़रूरत है। हम ने जब भी जमाअत को बुलाया है, तो जमाअत हमारी मदद के लिए आई है। इस्लाम वर्तमान में संप्रदाय में विभाजित है और अब हमें एकता और संगठन की आवश्यकता है। धर्म का महत्व है, लेकिन मैं कहता हूं कि पहले मानवता है, और इस के बाद राष्ट्रीयता और दूसरी चीजें आती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "यदि आप इसी सिद्धांत को मान लें कि मानव मूल्य सबसे पहले हैं, अल्लाह तआला ने भी यही फरमाया है कि जो मेरे अधिकार अदान नहीं करते वे माफ नहीं होंगे। इसलिए हमें इंसानियत को पहचानना चाहिए। और एक दूसरे के अधिकारों का ख्याल रखना चाहिए।

* एक मित्र ने पूछा कि क्या अहमदी लड़की की शादी ग़ैर-अहमदी मर्द के साथ हो सकती है, जब कि वह आदमी जमाअत का इंकार न करता हो।?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अगर कोई मजबूरी हो तो कई बार अनुमति भी देता हूँ लेकिन आमतौर जिस तरह इस्लाम में विलायत का अधिकार पिता को दिया गया है इसी तरह इस्लाम में जो ख़िलाफत का स्थान है उसे भी विलायत का अधिकार भी उपलब्ध है। कभी-कभी ऐसे रिश्ते हों जहां मजबूरी हो तो मुझे अनुमति देने की इजाज़त है, लेकिन इस में शर्त यह है कि निकाह अहमदी पढ़ाए क्योंकि काफिर कहने वाले इमाम की इमामत तो हम स्वीकार नहीं कर सकते। यह तो विशेष परिस्थितियों में अनुमति है, लेकिन आम तौर पर यह कोशिश होनी चाहिए कि दोनों अहमदी हों ताकि उनकी अगली नस्ल सुरक्षित रहे और आपस में घरों में कोई नुकसान न हो। बजाय इसके कि एक का किबला एक तरफ हो और दूसरे का दूसरी तरफ हो। अगली नस्लों को जमाअत की पहचान करवाने के लिए, उन्हें जमाअत पर स्थापित रखने के लिए ही, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने यह फरमाया था। इसलिए प्रशासनिक दृष्टि से जमाअत कोशिश करती है कि अहमदी का रिश्ता अहमदी के साथ ही हो। ?चूंकि मर्द का प्रभाव अधिक होता है इसलिए जो अहमदी लड़की ग़ैर अहमदी लड़के से शादी कर रही होती है उस का औलाद पर अधिक प्रभाव होता है और बावजूद महिला की इच्छा के उनके बच्चे अहमदियत के पास नहीं आते। अगर कोई इस बात की गारंटी दे दे कि औरत इस मामले में बिल्कुल आज़ाद होगी और ऐसा ही होना चाहिए, तो इसमें कोई नुकसान नहीं होगा। हम समझते हैं कि इमाम आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार ज़माना के जिस इमाम ने आना था वह आ गया तो इस को स्वीकार करना पहली प्रमुखता है इस प्रमुखता के कारण हम कहते हैं कि अहमदी अहमदियों के अन्दर ही रिश्ता करें ताकि वह एक धर्म पर इकट्ठा रह सकें।

* फिर एक अरब महिला ने कहा कि मैं सीरिया से हूं और मुझे यहां जर्मनी में आकर अहमदियत का पता चला है। मैं यहां अहमदियों की मस्जिद में जाती हूं, तो अहमदी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ती हूं। मुझे समझ नहीं आती कि अहमदी ग़ैर अहमदी के पीछे क्यों नमाज़ नहीं पढ़ते, जबकि ग़ैर अहमदी भी उसी अल्लाह, रसूल और कुरआन का पालन करता है। अगर अहमदी ग़ैर अहमदी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ लेता है, तो इस से क्या अंतर होगा?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "जहां तक नमाज़ का सवाल है, कोई अंतर नहीं होगा। परन्तु वास्तविक बात यह है कि हम ईमान लाते हैं और मानते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मसीह मौऊद के बारे में जो भविष्यवाणियां थीं और वे पूरी हो गई हैं। जिस महदी ने आना था उस को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इमाम भी कह दिया और जिस को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इमाम कह दिया उसे अगर कोई नमाज़ पढ़ाने वाला इमाम नहीं समझता तो हम उसकी इमामत नहीं मान सकते। हम ग़ैर-अहमदियों की इमामत को क्यों नहीं पहचान सकते? इसलिए कि जिस इमाम को हम मानते हैं और जिसे अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इमाम कहा वह उस इमाम से इनकार करने वाले हैं, फिर यह कैसे हो सकता है कि जो उसका इनकार करने वाला है हम उसे पसंद करें और इसके पीछे नमाज़ पढ़ लें। पहली बात तो यह है। दूसरी बात यह है कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में भी एक समय ऐसा था जब अहमदी ग़ैर अहमदियों के पीछे नमाज़ पढ़ लिया करते थे लेकिन ग़ैर अहमदी उलमा ने ख़ुद अहमदियों के ख़िलाफ फतवे देकर अपनी मस्जिदों में आने से रोका बल्कि उन पर सख्ती की, इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि चूंकि अब इन लोगों ने स्पष्ट अंतर किया है और मैं अल्लाह तआला से इमाम होकर आया हूँ और मुझे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इमाम कहा है, इसलिए, तुम लोग ऐसे लोगों की इमामत न मानों, और उसके पीछे नमाज़ न पढ़ो। इमामत के अलावा जहां तक मानव मूल्यों का सवाल है, हम एक साथ संघर्ष करते हैं, और एक-दूसरे के साथ किसी भी सामाजिक संबंध बनाने की कोशिश करते हैं। इस को निभाने की कोशिश करते हैं।

* फिर एक और अहमदी अरब महिला ने कहा कि मेरा प्रश्न कोई नहीं है लेकिन मेरे पिता मुहम्मद साओरी जो कि सीरिया में रहते हैं उन की अमानत मेरे पास है। मेरे पिताजी ने कहा था कि आप जब भी हुज़ूर से मिलें तो मेरा सलाम हुज़ूर की सेवा में पहुँचा दें। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: ठीक है। वअलैकुम अस्सलाम।

* एक अरब मित्र ने पूछा कि क्या आपके पास अल्लाह तआला के साथ संबंध स्थापित करने का विशेष तरीका है या केवल दुआ के द्वारा ही सम्बंध स्थापित हो सकता?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "कोई विशेष तरीका क्या हो सकता है?" दुआ ही है। अल्लाह तआला ने ही यही तरीका बताया है कि दुआ करो, मैं इसे स्वीकार करता हूं। मैं पीरों की तरह या ग़ैर अहमदी मौलवियों की तरह यह तो नहीं कह सकता कि मैं टेलीफोन करके कह दूं कि मेरी अल्लाह तआला के साथ डायरेक्ट कॉल हो गई है और तुम्हारी बातों का अमुक अमुक जवाब मिला है। जो तरीका आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत से प्रमाणित है वही अल्लाह तआला से सम्बन्ध का तरीका है।

* एक अरब अहमदी ने सवाल किया कि छोटे बच्चे कैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता को जान सकते हैं।?

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 18 -25 January 2018 Issue No. 3-4

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "यह तो प्रशिक्षण के द्वारा होता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि हर बच्चे का जन्म स्वभाव से नेकी पर होता है। उसके बाद, उसके माता-पिता ने उसे ईसाई, यहूदी या पारसी बना देत हैं। मां की गोद में बच्चा पलता है अगर माँ धार्मिक है और धर्म जानने वाली है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई को समझने वाली है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान को जानने वाली है तो वह ख़ुद ही बच्चे के दिल में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता उत्पन्न कर देगी। और जो माताएं अपने बच्चों की इस तरह से प्रशिक्षित करती हैं उनके मन में बचपन से ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता बड़ी अच्छी तरह सुदृढ़ होती है। यही कारण है कि मैं औरतों से कहता हूं कि धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता दें । यह आज मेरे भाषण का सार है।

* उस पर अरब लड़के ने अर्ज़ किया कि अगर बच्चा ग़ैर अहमदी हो तो उस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाकत कैसे साबित कर सकते हैं?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अगर बच्चा ग़ैर अहमदी है तो बच्चे को धर्म समझने की कोई बुद्धि नहीं होती। इस लिए इस का तो कोई जुर्म नहीं है। जब तक उसको होश की उम्र नहीं आती और वह धर्म को समझने में सक्षम नहीं हो जाता उसे जबरदस्ती धर्म समझाना तो उस पर अत्याचार करना है। ग़ैर अहमदी मौलवियों की तरह तो नहीं कर सकते जैसे वह डंडे मार-मार कर जिस तरह कुरआन पढ़ाते हैं या काइदा सिखाते और बच्चे रो रहे होते हैं और मौलवी एक आयत याद करवाकर कहते हैं कि हम ने कमाल कर दिया है। वह डंडे की आयत होती है, वह अपने दिल से याद नहीं कर रहा होता। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फमराया: समझ की उम्र भी अलग होती है। हज़रत अली रज़ि अल्लाह की कितनी उम्र थी कि उन्हें समझ आ गई और दूसरी और अबूजहल की कितनी उम्र थी कि उसे समझ नहीं आई।

* मुलाकात के दौरान एक अहमदी दोस्त ने अर्ज़ किया कि मैं काफी सालों से अहमदी हूँ और मेरी चिर इच्छा थी कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के हाथ को चूंमूं। अत: मुलाकात के अंत में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने उस दोस्त को अपने पास बुलाया इस तरह उस दोस्त को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के मुबारक हाथ को चूमने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अरब दोस्तों की हुज़र अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाकात 9 बजकर 15 मिन्ट तक जारी रही। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मर्दाना जलसा गाह में पधार कर नमाज़ मग़रिब व इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ें अदा करने के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने घर गए।

**मेहमानों की प्रतिक्रियाएं**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के आज अंग्रेज़ी भाषा में ख़िताब ने मेहमानों पर गहरा प्रभाव छोड़ा और कई मेहमानों ने स्पष्ट रूप से इस बात का इज़हार किया कि ख़लीफतुल मसीह के भाषण ने हमारे विचार बदल दिए हैं और आज हमें इस्लाम की मूल और असली शांति का पता चला है। इनमें से कुछ मेहमान के विचार नीचे लिखे जाते हैं।

* स्पेन का यूनिवसिर्टी के प्रोफेसर Jesus ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के दूसरे दिन तब्लीग़ी मेहमानों के ख़िताब के बारे में अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि यह बहुत ही भव्य ख़िताब था जिस का हर शब्द गहरे अर्थ पर आधारित था। यह राजनीतिज्ञों के खोखले भाषणों की तरह नहीं था, जो सुनने वालों को ख़ुश करने के लिए की जाती हैं। इमाम जमाअत अहमदिया ने बड़े साहस और बहादुरी के साथ हमें दुनिया की वर्तमान स्थिति के बारे में बताया और स्पष्ट रूप से व्यक्त किया कि अगर दुनिया इस मार्ग पर चलती रहेगी तो यह एक बड़े खतरे का सामना करना होगा। फिर इमाम जमाअत अहमदिया ने न केवल समस्याओं के बारे में अवगत कराया बल्कि इन समस्याओं का समाधान भी बताया। आपने ग़ैर मुसलमानों द्वारा बनाई गई समस्याओं का उल्लेख किया है, और समाधान के लिए कुरआन को आधार भी बनाया है। इमाम जमाअत अहमदिया ने हमें बताया कि हम शांति कैसे स्थापित कर सकते हैं। उन्होंने कुरआन की आयतों का हवाला दिया था उन से स्पष्ट था कि इस्लाम प्रत्येक प्रकार के आतंकवाद और उग्रवाद को ख़ारिज करता है और एक शांतिपूर्ण धर्म है।

* एक मेहमान Christian Schoop साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: इमाम जमाअत अहमदिया का ख़िताब सुनकर बहुत भावुक हो गया था क्योंकि इमाम जमाअत अहमदिया दिल से बोल रहे थे जिसे महसूस कर सकता था। उनके शब्द बहुत गम्भीर हिक्मत से भरे हुए और बहुत अच्छी तरह से और ज्ञान वर्धक थे। मेरी इच्छा है कि काश मैं इमाम जमाअत अहमदिया के साथ मिलकर काम करूं, क्योंकि इमाम का जमाअत लोगों को एक हाथ पर जमा कर रहे हैं और उन्हें सच्चाई दिखा रहे हैं। बल्कि, मैं कहूँगा कि हम इस प्रकार जमा हो जाएं जैसे एक शरीर ही के अंग हों। इमाम जमाअत अहमदिया के इस मिशन में मदद करने से मुझे भी लाभ होगा।

* एक सीरियन दोस्त जो लम्बे समय से पौलेण्ड में रहते हैं। उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया वर्णन करते हुए कहा कि: इमाम जमाअत अहमदिया का भाषण बहुत ही सुन्दर था। इस ख़िताब को सुनकर, मेरा दिल ख़ुशी की भावनाओं से भर गया। सिर्फ एक ख़िताब में, आपने दुनिया की समस्याओं का हल किया है उन्होंने कहा कि विभिन्न देशों के बीच शांति कैसे स्थापित की जा सकती है, और इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में उन्होंने इस समाधान को बताया कि जिसके कारण मुझे अपने मुसलमान होने पर गर्व होने लगा। इमाम जमाअत अहमदिया ने कुरआन की आयतों को बहुत ही उत्तम तरीके से चुना और हर आयत बहुत ही उचित थी, जो के हुज़ूर के दावे अर्थात इस्लाम अमन का धर्म है को दृढ़ता प्रदान कर रही थी। हालांकि मैं एक मुस्लिम हूं, परन्तु आज मैंने इमाम जमाअत अहमदिया के भाषण में अपने स्वयं के ईमान के बारे में कई नई चीज़ें सीखी हैं। उन्होंने "रब्बुल आलमीन" का असली अर्थ बताया कि अल्लाह तआला मुसलमानों का ख़ुदा है, ईसाइयों का भी ख़ुदा है यहूदियों का भी ख़ुदा है यहां तक कि नास्तिकों का भी ख़ुदा है। यह एक बहुत अच्छा बिन्दु है यदि इस से शांति स्थापित नहीं की जा सकती तो शांति किसी भी चीज़ द्वारा स्थापित नहीं की जा सकती।

* एक मेहमान Grunniger साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया ने एक दूसरे को समझने और एक दूसरे के साथ चर्चा करने के संदर्भ में बात की और इसी बात की आज दुनिया को ज़रूरत है। आपके शब्दों ने मुझे आज दुनिया की वर्तमान स्थिति के बारे में सोचने के लिए मजबूर किया है। इमाम जमाअत अहमदिया ने कुरआन की आयतों का उद्धरण देकर यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर दी कि इस्लाम कभी चरमपंथ का धर्म नहीं है और बताया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो ऐसे इंसान थे जो दुश्मनों को भी माफ फरमा देते थे। ख़लीफा का भाषण सुन कर पहली बार मुझे एहसास हुआ कि वास्तव में इस्लाम क्या है इस्लाम प्रेम और मुहब्बत का धर्म है। इस्लाम हरगिज़ ऐसा नहीं जैसा मीडिया दिखा रहा है। आप के ख़लीफा के अन्दर जरूर कोई चीज़ है जो मानव जाति को अपने तरफ खींचती है। आपके ख़लीफा चुंबक की तरह हैं।

* एक मेहमान श्री जॉनसन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया के भाषण का केन्द्रीय बिन्दु ही शांति था। सबसे अच्छी बात यह है कि जो भी उन्होंने कहा वह सच था। आपने कहा था कि हर इंसान जन्म के समय बराबर होता है। इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई काला है या गोरा सब के पास एक जैसी समान क्षमताएं हैं। अल्लाह तआला ने सभी को एक जैसी क्षमताएं ही दी हैं। इस युग में इस संदेश की ही आवश्यकता है कि जैसा कि इमाम जमाअत अहमदिया ने कहा, हमें पिछली गलतियों को दोबारा नहीं करना चाहिए और हथियारों के ज़ोर से शांति स्थापित नहीं करनी चाहिए, बल्कि प्यार और मुहब्बत के माध्यम से भी शांति बनाई रखनी चाहिए। आपके ख़िताब का हर बिंदु तार्किक और व्यापक था। एक महान ख़िताब था। (शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad